Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ
اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :149)

अनुवाद: हे वे लोगो! जो ईमान लाए हो (अल्लाह से) सब्र और नमाज़ के साथ सहायता मांगो। निस्संदेह अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 16

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

1 शअबान 1439 हिजरी कमरी 19 शहादत 1397 हिजरी शमसी 19 अप्रैल 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

कोई जाति नहीं जिसमें मेरे निशान प्रकट नहीं हुए और कोई सम्प्रदाय नहीं जो मेरे निशानों का गवाह नहीं। यदि इन निशानों के गवाह दस करोड़ भी कहें तो कुछ अतिश्योक्ति नहीं होगी किन्तु विरोधियों की दशा पर रोना आता है कि उन्होंने कुछ लाभ प्राप्त न किया। यदि ये निशान जो उनको दिखाए गए हज़रत ईसा बिन मरयम के समय में यहूदियों को दिखाए जाते तो वे ضربت عليهم الذلّة के चरितार्थ न होते और यदि लूत की जाति इन निशानों को देखती तो वह एक भारी भूकम्प से पृथ्वी के नीचे न दबाई जाती किन्तु खेद उन हृदयों पर कि वे पत्थर से भी अधिक कठोर सिद्ध हुए

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

128. एक सौ अट्ठाईस वां निशान - 11, फरवरी 1906 ई. को बंगाल के बारे में एक भविष्यवाणी की गई थी जिसके शब्द ये थे - "पहले बंगाल के बारे में जो कुछ आदेश जारी किया गया था अब उनको सांत्वना दी जाएगी।" उसका विवरण यह है। कि जैसा कि सर्व विदित है कि सरकार ने बंगाल विभाजन के बारे में आदेश जारी किया था और यह आदेश बंगालियों का इतना अधिक हृदय तोड़ने वाला हुआ था कि जैसे उनके घरों में मातम छा गया था और उन्होंने बंगाल-विभाजन को रोकने के बारे में बहुत प्रयास किया परन्तु असफल रहे अपितु इसके विपरीत परिणाम यह हुआ कि सरकारी अफ़सरों ने उनका कोलाहल पसन्द न किया तथा उनके बारे में अफसरों की ओर से जो कुछ कार्यवाहियां हुईं हमें यहां उसका विवरण देने की भी आवश्यकता नहीं। विशेष तौर पर फिल्लर लेफ्टीनेन्ट गवर्नर को उन्होंने अपने लिए मृत्यु का फ़रिश्ता (यमराज) समझा और संयोग ऐसा हुआ कि उन दिनों में हो रहा है और इससे बढ़कर भविष्यवाणी के पूर्ण होने का और क्या प्रमाण होगा कि बंगालियों ने उस कार्यवाही में अपनी सांत्वना स्वयं स्वीकार कर ली और सरकार के प्रति अत्यन्त कृतज्ञता प्रकट की है। मेरी यह भविष्यवाणी केवल हमारी पत्रिका रीव्यू आफ रेलीजन्ज़ में ही प्रकाशित नहीं हुई थी वरना पंजाब के बहुत से समाचार-पत्रों ने उसे प्रकाशित किया था, यहां तक कि स्वयं बंगाल के कुछ प्रसिद्ध समाचार-पत्रों ने इस भविष्यवाणी को प्रकाशित कर दिया था।

इस बात पर एक अन्य प्रमाण कि यह भविष्यवाणी पूर्ण हो गई यह है कि - 'अम्रत बाज़ार पत्रिका' कलकत्ता का अंग्रेज़ी अखबार जो बंगालियों का सर्वाधिक प्रसिद्ध अखबार है लिखा है जिसके निम्नलिखित वाक्य को अख़बार सिविल एण्ड मिलिट्री गज़ट लाहौर के 22, अगस्त 1906 ई. के प्रकाशन में लिखा है और वह यह है - "अधिक अनुमान यह है कि उसका अर्थात् फिल्लर का उत्तराधिकारी (नया लेफ्टीनेन्ट गवर्नर) विशेष तौर पर सांत्वना की नीति अपनाएगा। इसमें सन्देह नहीं कि यह सर्वथा हमारे उद्देश्य के अनुकूल है।

कथित अख़बार के इस वाक्य से भी प्रकट है कि उसने इस बारे में अपना सन्तोष व्यक्त किया है कि लेफ्टीनेन्ट गर्वनर का अवश्य ही यह कर्त्तव्य होगा कि बंगालियों को सांत्वना देता रहे। अत: कथित अख़बार भी भविष्यवाणी के पूर्ण होने की एक साक्ष्य है।

फिर अन्त में हम इस भविष्यवाणी के पूर्ण होने पर एक और शक्तिशाली प्रमाण का उल्लेख करते हैं और वह यह कि एक अंग्रेज़ अफ़सर जो पचास वर्ष सरकार के एक प्रतिष्ठित पद पर रहा अख़बार सिविल एण्ड मिलिट्री गज़ट लाहौर दिनांक 24, अगस्त 1906 ई. में एक लम्बे पत्र के मध्य में जिसमें यह प्रकट किया गया है कि सर फिल्लर का त्याग-पत्र सर्वथा बंगाली बाबुओं की इच्छानुकूल है लिखता है - इस में कुछ सन्देह नहीं कि उसके अर्थात् फिल्लर के उत्तराधिकारी को यह आदेश (उच्चाधिकारियों से) प्राप्त हुआ है और उसने उसे स्वीकार किया है कि उपद्रवी बुबुओं के साथ सांत्वना की पद्धति का पालन करे।

अब देखो कि कितनी स्पष्टता से यह भविष्यवाणी पूरी हो गई। ख़ुदा ताज़ा से ताज़ा अपने निशान दिखाता जाता है। खेद! कैसे असावधान हृदय है कि फिर स्वीकार नहीं करते हम इन निरन्तर निशानों से ऐसे विश्वास से भर गए हैं कि सागर जल से भरा हुआ है किन्तु खेद कि हमारे विरोधियों को इस अमृत से एक बूंद भी प्राप्त नहीं हुई। इस दुर्भाग्य का अनुमान नहीं हो सकता।

कोई जाति नहीं जिसमें मेरे निशान प्रकट नहीं हुए और कोई सम्प्रदाय नहीं जो मेरे निशानों की गवाह नहीं। यदि इन निशानों के गवाह दस करोड़ भी कहें तो कुछ अतिश्योक्ति नहीं होगी किन्तु विरोधियों की दशा पर रोना आता है कि उन्होंने कुछ लाभ प्राप्त न किया। यदि ये निशान जो उनको दिखाए गए हज़रत ईसा बिन मरयम के समय में यहूदियों को दिखाए जाते तो वे

ضربت عليهم الذلّة

के चरितार्थ न होते और यदि लूत की जाति इन निशानों को देखती तो वह एक भारी भूकम्प से पृथ्वी के नीचे न दबाई जाती किन्तु खेद उन हृदयों पर कि वे पत्थर से भी अधिक कठोर सिद्ध हुए और प्रत्येक अन्धकार से अधिक उन के हृदय का अन्धकार बढ़ गया। वास्तविकता यह है कि जैसा कि युग ने प्रत्येक सांसारिक सामान में उन्नति की वैसी ही बेईमानी और कुफ्र में भी उन्नति की। अत: यह उन्नति प्राप्त कुफ्र चाहता है कि उन पर कोई साधारण अज़ाब न आए अपितु वह अज़ाब आए जो संसार के प्रारंभ से आज तक कभी नहीं आया। बहरहाल हम ख़ुदा का हज़ार-हज़ार आभार प्रकट करते हैं कि जिस प्रकाश को विरोधियों ने स्वीकार नहीं किया और अंधे रहे ही प्रकाश हमारी दृष्टि और आध्यात्मक ज्ञान की वृद्धि का कारण हो गया।

(हकीकतुल वह्यी रूहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 309)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

जलसा सालाना ब्रिटेन 2017 ई के अवसर पर सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ की व्यस्तता (भाग-2)

☆ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के ख़िताबों का उन के दिल पर गहरा प्रभाव पड़ा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनिस्त्रेहिल अज़ीज़ के ख़िताब बहुत उच्च स्तर के थे।

(स्वीडन के एक सदस्य)

मुझे अपने निकटवर्तियों से भी अधिक अहमदियों से मुहब्बत मिलती है मैं हुज़ूर को एक महान व्यक्ति समझता हूं जिनकी बुद्धिमत्ता बहुत व्यापक है और उनके साथ कुछ क्षणों व्यतीत करने के बाद मैं समझ सकता हूँ कि अहमदी क्यों अपने ख़लीफा से इतना प्यार करते हैं।

(कफ़न मसीह के प्रसिद्ध शोधकर्ता एम शॉवट्र्स साहिब)

जलसा में सम्मिलित होने वाले सम्मानित सदस्यों के ईमान वर्धक विचार

दुनिया के विभिन्न देशों से जलसा में शामिल होने वाले प्रतिनिधियों की हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकातें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ की इन दिनों में असामान्य व्यस्तता का संक्षिप्त उल्लेख

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

स्वीडन के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

सब से पहले स्वीडन से आने वाले प्रतिनिधिमंडल को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य मिला।

स्वीडन के प्रतिनिधिमंडल में वरिष्ठ पुलिस अधिकारी Ulf Bostrom उलफ बोसस्ट्रॉम साहिब एक स्वीडिश नए अहमदी Sten Muhammad Yussif Widhe (स्टेन मुहम्मद यूसुफ व्याधे) साहिब और रज़ा हानी शामिल थे।

* मुलाकात के दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने स्वीडिश नई बैअत करने वाले दोस्त Sten Muhammad Yussif साहिब से उनके आवास के संबंध में पूछा फरमाया जिस पर महोदय ने अर्ज़ किया कि उनकी आवास की व्यवस्था होटल में की गई है और उनका हर तरह से ध्यान रखा गया है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया, "जलसा गाह के अन्दर रहा जाए तो इस का अपना अलग मज़ा है।

महोदय ने बताया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के ख़िताबों का उन के दिल पर गहरा प्रभाव पड़ा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनिस्त्रेहिल अज़ीज़ के ख़िताब बहुत उच्च स्तर के थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि किस प्रकार शांति स्थापित हो सकती है? यदि ज़िम्मेदार लोग हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ की बातों को सुनें और उनका अनुसरण करें हैं, तो दुनिया से उप्रवद खत्म हो जाए।

रज़ा हानी साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से अपने घर वालों के लिए तबररुक मांगा जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने उन्हें चॉकलेट प्रदान किए।

* मुलाकात के बाद, पुलिस अधिकारी उल्फ़ बोसस्ट्रॉम का कहना था कि हुज़ूर के सामने बात करना मुश्किल होता है। जलसा के बाद, महोदय ने अपने विचारों को वर्णन करते हुए कहा: "मैं पहले भी जलसा में शामिल हो चुका हूँ और इस बार फिर मुझे जलसा में शामिल होने का अवसर मिला। जलसा के सभी कार्य बहुत अच्छी तरह से हो रहे थे। कुछ लोगों को बड़े कठिन काम सौंपे गए थे, लेकिन जहां कहीं भी जमाअत के लोगों से मिलने का मौका मिला, उन्हें एक नौतिकता और आचरण को प्रकट करते देखा। सभी लोग अपने कर्तव्यों को बहुत वफादारी के साथ अन्जाम दे रहे थे। जलसा के हर तरफ एक शांतिपूर्ण माहौल था। जमाअत का माटो प्रेम सब के लिए घृणा किसी से नहीं। सब स्थान पर स्पष्ट था।

मैंने देखा है कि इमाम जमाअत अहमदिया ज्ञान की बहुत अधिक सराहना करते हैं। जमाअत के लोगों की ज्ञान के लिए की गई कोशिशों को जलसा के दौरान सराहा गया। ज्ञान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है और इस ज्ञान के लिए, जमाअत अहमदिया दुनिया के कोने तक लोगों की सेवा करने में लगी हुई है। जमाअत अहमदिया स्कूल बना कर मदद कर रही है और लोगों को अपने पैरों पर खड़े होने में मदद करती है। जमाअत जो भी सेवा करती है इस के बदले में इनाम नहीं लेती। मेरे विचार में इस से बढ़ कर मानवता की सेवा सम्भव नहीं है। मैं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ और जमाअत अहमदिया की दिल की गहराई से आभारी हूं कि उन्होंने मुझे इस जलसा में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया और मुझे बहुत प्यार दिया।

स्वीडन के वफद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात 8:00 बजे तक जारी रहे। बाद में प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

रियूय आफ रिलीजनस विभाग के अधीन जलसा में शामिल होने वाले कुछ ग़ैर-मुस्लिम दोस्तों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात।

रियूय आफ रिलीजनस विभाग के अधीन कुछ ग़ैर-मुस्लिम मेहमान भी जलसा में शालि हुए थे। इन मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य पाया।

रियूयू आफ रिलीजन्स ने जलसा गाह में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया था जिस में Shroud of Turin(मसीह के कफन) के बारे में एक प्रदर्शनी थी। इस हवाले से Shroud of Turin के कुछ विशेषज्ञों और माहरीन और इस्लामी इतिहास के माहरीन विशेष रूप से जलसा में शामिल होने के लिए आए थे।

(1) डाक्टर ओका शा अलदाली जो कि Egyptology and Medeaval Arabic मिस्र के इजिप्टोलोजी और मेडीवल अरबी माहिर हैं और लंदन विश्वविद्यालय में यू.सी.एल में प्रोफेसर हैं।

(2) डॉ हनी रिशवान साहिब, इन का सम्बन्ध मिस्र से है और एक अरबी और प्राचीन मिस्री भाषा के विशेषज्ञ हैं।

(3) Olaf Jostein Andreassen ओलाफ जोसेन एंड्रसेन का सम्बन्ध नॉर्वे से है और उन की गिनती भी मसीह के कफन के प्रसिद्ध शोधकर्ताओं के रूप में की जाती है।

(4) श्री Mr Burno Barberis बर्नो बारबेरीस टोरेन की एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक समिति के अध्यक्ष हैं।

(5) Peter Sanders पीटर सैंडर्स एक प्रसिद्ध फोटोग्राफर हैं।

(6) David Rolfe डेविड रॉल्फ ब्रिटिश सोसाइटी ऑफ़ पार्टनर न्यूज़लेटर के संपादक हैं। पिछले 40 सालों से कफन मसीह की जांच कर रहे हैं और इस बारे में वृत्तचित्र भी बना चुका हैं।

(7) Barrie M Schwortz बैरी एम श्वाट्र्ज़ की गणना भी मसीह के प्रसिद्ध शोधकर्ताओं में से है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने इन मेहमानों से सम्बोधित होते हुए फरमाया, मैं इस साल प्रदर्शनी देखने नहीं आ सका। दो बार सोचा था लेकिन बारिश और अपनी व्यस्तता के कारण नहीं आ सका।

शेष पृष्ठ 12 पर

ख़ुत्बः जुमअः

इस्लाम में उच्च नैतिकता अपनाने, अच्छे आचरण हर अवसर पर प्रकट करने, घरों में और समाज में भी और हर स्तर पर उच्च नैतिकता बनाने, अपनों और ग़ैरों से अच्छे आचरण का प्रदर्शन करने के लिए जितनी शिक्षा दी गई है और किसी छोटे छोटे पक्ष को भी नहीं छोड़ा गया था, किसी अन्य धर्म में इस प्रकार से विस्तार से वर्णित नहीं किया गया। लेकिन दुर्भाग्य से मुसलमानों को आम तौर पर सबसे कम स्तर पर माना जाता है।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने कर्म से भी और विभिन्न अवसरों पर बार-बार अपनी उम्मत को नैतिकता के उच्च मानकों को प्राप्त करने पर ज़ोर दिया है। मुसलमान आम तौर पर रसूल की मुहब्बत का दावा तो करते हैं, लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातों और सुन्नत पर अनुकरण न होने के बराबर है। मुसलमानों की इसी स्थिति को ध्यान में रखते हुए, अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को भेजा लेकिन इस तरफ भी ये लोग ध्यान देने से इनकार कर रहे हैं।

इन की यह अवस्था हम अहमदियों को इस तरफ ध्यान दिलाने वाली होने चाहिए कि हम अपनी सारी कोशिशों के साथ उच्च नैतिकता को अपनाने की कोशिश करें, सारी चेष्ठाओं के साथ नैतिकता को अपनाने की कोशिश करें जो इस्लाम की शिक्षा है और जिस का आदर्श आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमारे सामने प्रस्तुत किया है किसी भी रूप में इस बारे में नसीहत फरमाई है।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेशों के आलोक में कुछ आधरभूत नैतिकता की शिक्षा और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च नैतिकता के पवित्र नमूनों का वर्णन। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के उपदेशों के आलोक में नैतिकता का परिचय और विभिन्न आचरणों को धारण करने की नसीहत।

आदरणीय शेख़ अब्दुल मजीद साहिब पुत्र आदरणीय अब्दुल हमीद साहिब क्षेत्र डिफन्स सोसायटी कराची की वफात, मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 2 मार्च 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

इस्लाम में उच्च नैतिकता अपनाने,अच्छे आचरण हर अवसर पर प्रकट करने, घरों में भी और समाज में भी और हर स्तर पर उच्च नैतिकता धारण करने, अपनों और ग़ैरों से अच्छे आचरण का प्रदर्शन करने के लिए जितनी शिक्षा दी गई है और किसी छोटे-छोटे पक्ष को भी नहीं छोड़ा गया था, किसी अन्य धर्म में इस प्रकार से विस्तार से वर्णित नहीं किया गया। लेकिन दुर्भाग्य से मुसलमानों को आम तौर पर सबसे कम स्तर पर माना जाता है। ग़ैर मुस्लिम उन पर उँगली उठाते हैं क्योंकि जो कुछ वे कहते हैं उन के कर्म उन के विरुद्ध होते हैं।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने कर्म से भी और विभिन्न अवसरों पर बार-बार अपनी उम्मत को नैतिकता के उच्च मानकों को प्राप्त करने पर ज़ोर दिया है। मुसलमान आम तौर पर रसूल की मुहब्बत का दावा तो करते हैं, लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातों और सुन्नत पर अनुकरण न होने के बराबर है। मुसलमानों की इसी स्थिति को ध्यान में रखते हुए, अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को भेजा लेकिन इस तरफ भी ये लोग ध्यान देने से इनकार कर रहे हैं।

बल्कि कुछ लोग विरोध में कुछ स्थानों पर या कुछ देशों में चरम पर पहुंचे हुए हैं और मामूली नैतिकता से हटकर, बल्कि एक नैतिकता से नीचे गिरे हुए व्यक्ति से भी घटिया बन कर, बहुत गंदी और बेहूदा भाषा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के मानने वालों के लिए प्रयोग करते हैं और इस का परिणाम भी ये दुनिया में सारे स्थानों में भुगत रह हैं। जैसा कि मैंने कहा कि ग़ैर मुस्लिम इन पर उंगली उठाते हैं। इन की यह हालत हम अहमदियों को इस ओर ध्यान दिलाने वाली होनी चाहिए कि हम अपनी सारी चेष्टाओं के साथ उच्च नैतिकता को अपनाने वाले हों। सारे सामर्थ्य के साथ उच्च आचरण को अपनाने की कोशिश करें जो इस्लाम की शिक्षा है और जिस का आदर्श आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमारे सामने स्थापित फरमाया है। वरना फिर हमें अहमदी होने और कहलाने का कोई लाभ नहीं।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श को हम देखें तो हैरत वाला स्तर नज़र आता है । आप के घरेलू हालात देखें तो कहीं आप अपनी पत्नी के दूसरी पत्नी के छोटे कद का उपहास करने पर सख्त नफरत व्यक्त करते हैं कि किसी की भावना को ठेस न पहुंचानी चाहिए। (सुनन अबू दाऊद किताबुल अदब हदीस 4875) तो कहीं इस बात पर एक पत्नी को समझा रहे हैं कि थोड़ी सी भी घृणा का प्रकटन दूसरी पत्नी के किसी काम पर नहीं होना चाहिए। (सुनन इब्ने माजा किताबुल इहकाम हदीस 2333) कहीं आप बच्चों की नैतिकता ऊंचा करने की नसीहत फरमाते हैं कि लोगों के फलों पर पत्थर मार कर उनके कच्चे पक्के फलों को बर्बाद न करो। आपने एक बच्चे से कहा कि अगर बहुत भूख लगी हुई है तो पेड़ के नीचे गिरे ताज़े खजूर के गिरे हुए फल उठा कर खा लो लेकिन साथ ही यह नसीहत फ़रमाई कि मैं तुम्हें दुआ देता हूं कि तुम्हें इस प्रकार की अवस्था न पहुंचे के तुम नीचे से उठा कर खजूरें खानीं पड़े। तुम विवश ही न हो। अल्लाह तआला तुम्हारे लिए सामान फरमाता रहे।(सुनन अबू दाऊद किताबुल जिहाद हदीस 2622) इस दुआ के साथ बच्चे को भी ध्यान दिला दिया कि अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अल्लाह तआला की तरफ ध्यान दो, न कि ग़लत तरीके से लोगों के मालों को उठाओ। चूंकि मजबूरी में कई बार इस प्रकार की चीज़ें जो नीचे पड़ी होती है जायज़ बन जाती है परन्तु आप ने फरमाया कि उच्च नैतिकता धारण करो और फिर यही नेकी है। फिर एक बच्चे को तेज़ी से खाने और अपना हाथ खाने का पलेट या थाली पर फेरने के कारण फरमाया कि पहले बिस्मिल्लाह पढ़ो, फिर दायें हाथ से खाना खाओ और अपने सामने से खाओ। (सहीह बुख़ारी हदीस 5376) अत: बच्चों की तरबियत भी इस प्रकार करनी चाहिए कि बड़े हो कर इन में उच्च नैतिकता पैदा हो।

फिर झूठ एक पाप है और सच्चाई एक नेकी और नैतिकता है। इसे बचपन से ही बच्चों के दिलों में स्थापित करने के लिए आप ने इस तरह नसीहत फ़रमाई कि एक सहाबी अपने बचपन की घटना बताते हैं कि एक बार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे घर आए और मैं अपने बचपन की वजह से थोड़ी देर बाद ही घर में आप की उपस्थिति में खेलने के लिए बाहर जाने लगा तो मेरी मां ने मुझे इस बरकतों वाले माहौल से दूर जाने रोकने के लिए कहा कि इधर आओ अभी इधर रहो। मैं तुम्हें एक चीज़ दूंगी। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम इसे कोई चीज़ देना चाहती हो? मेरी मां ने कहा कि हां मैं इसे एक खजूर दूंगी। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगर तुम्हारा यह इरादा न होता और तुम सिर्फ बच्चे को बुलाने के लिए यह कहती तो फिर झूठ बोलने का गुनाह करने वाली होती। (सुनन अबी दाऊद किताबुल अदब हदीस 4991) अब इस बच्चे पर भी इस छोटी उम्र में सच्चाई का महत्त्व और झूठ से नफरत स्पष्ट हो

गई और बड़े होने तक उन्होंने यह बात याद रखी और उसके बाद वर्णन फरमाई कि मेरे दिल में यह महत्त्व था।

एक बार एक व्यक्ति ने उससे कहा, "यदि तुम सारी बुराइयों को नहीं छोड़ सकते, तो झूठ बोलना छोड़ दो।" एक बुराई कम से कम छोड़ो।

(तफ़सीरे कबीर इमाम राज़ी जिल्द 8 भाग 16 पृष्ठ 176 तफसीर सूर: अत्तौब: दारुल कुतुब अलइल्मिया बैरूत 2004 ई)

अब हम देखते हैं कि क्या आजकल के मुसलमानों के स्तर हैं कि इस बारीकी से झूठ से बचें और सच्चाई को स्थापित करें बल्कि हमें अपनी समीक्षा भी करनी चाहिए कि क्या हमारे यह मानदंड हैं। यह एक रिवायत में आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़े गुनाहों के बारे में बताता हुए फरमाया कि

एक रिवायत में आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़े गुनाहों के बारे में बताते हुए फरमाया बड़े गुनाह ये हैं कि अल्लाह तआला के किसी को साझी बनाना। माता पिता की नाफरमानी करना और फिर रिवायत करने वाले कहते हैं कि आप टेक लगाए हुए बैठे ये बातें कर रहे थे तो उठ कर बैठ गए और फरमाया कि ध्यान से सुनो झूठ और झूठी गवाही। फिर आप ने फरमाया, झूठ और झूठी गवाही। और बार-बार फरमाया। रावी यह कहता है कि आप यह कहते चले गए हैं और हम ने इच्छा की कि काश आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ामोश हो जाएं।

(बुख़ारी किताबुल अदब, हदीस 5976)

फिर हम इस रंग में भी आप की नैतिकता को देखते हैं। सहिष्णुता और धैर्य की गुणवत्ता क्या है और आप कैसे नसीहत फरमाते हैं। एक देहाती मस्जिद में पेशाब करने लगा। लोग इस की तरफ रोकने के लिए दौड़े। आपने फरमाया, इसे छोड़ दो, और जहां पेशाब किया है वहां पानी बहा दो। फिर आपने फरमाया कि तुम लोगों की आसानी के लिए पैदा किए गए हो न कि तंगी के लिए। इस पर देहाती हमेशा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपकार का वर्णन किया करता था।

(सुनन अत्तिरमज़ी हदीस 147)

आजकल तो लगता है कि मुस्लिम सरकारें भी, उल्मा भी, गिरोह भी दुनिया में तंगी पैदा करने के लिए सब से बढ़े हुए हैं। न छोटी बात में आसानियां पैदा करने वाले हैं न बड़ी बात पर। एक अवसर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगर तुम यह जानना चाहते हो कि तुम बुरा कर रहे हो या अच्छा कर रहे हैं तो अपने पड़ोसी को देखो कि वे तुम्हारे बारे में क्या राय रखते हैं। (सुनन इब्ने माजा हदीस 4222) फिर अफसरों को फरमाया कि तुम्हारे उच्च चरित्र का तब पता चलेगा जब तुम अपने आप को क़ौम का सेवक समझोगे और अपनी सारी क्षमताओं के साथ क़ौम की सेवा करोगे।(कन्ज़ुल उम्माल जिल्द 6 पृष्ठ 710 हदीस 17517 प्रकाशक मौसिसत अर्रिसाला बैरूत 1885 ई) ये मानक हमारे नेताओं और अधिकारियों में कहां पाए जाते हैं। इसलिए हमारे जो जमाअत के अधिकारी हैं उन को भी इस बात की तरफ ध्यान देना चाहिए।

फिर जब सारी शक्तियां आप को मिल गईं और अरब पर विजय हो गई तो हम आप की गुणवत्ता का स्तर यह देखते हैं। मक्का विजय के अवसर पर, आप ने किस प्रकार उच्च आदर्श को प्रकट किया कि दुश्मनों का माफ कर दिया। इस प्रकार के दुश्मन जो आप की जान के दुश्मन थे जिन्होंने आप को निरन्तर कष्ट दिए और फिर यही माफी बहुत से लोगों के इस्लाम लाने का कारण बन गई। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च स्तर का उच्च आचरण का वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फरमाते हैं कि

प्रतापी अल्लाह तआला हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करते हुए फरमाता है اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ (अलकल्म 5) अर्थात तू एक सम्माननीय आचरण पर स्थापित है। अत: इस व्याख्या के अनुसार इस के अर्थ यह हैं कि सारी किस्में आचरण की(कौन सी किस्में) दया(है), इंसाफ(है) रहम(है) उपकार, सच्चाई हौसला इत्यादि(अर्थात हौसले से किसी चीज़ को सहन करना) तुझ में जमा हैं। अत: जितनी इंसान के दिल में शक्तियां पाई जाती हैं जैसा कि अदब, लज्जा, सच्चाई, मुरव्वत ग़ैरत, इस्तिकामत(स्थिरता), शुद्धता, नेकी, संयम, सहानुभूति। इसी प्रकार बहादुरी, उदारता,क्षमा, धैर्य, दया, ईमानदारी, वफादारी आदि। जब ये सभी अवस्थाएं अक्ल और चिंतन के माध्यम से अपने स्थान और अवसर पर प्रकट की जाएंगी तो सब का नाम आचरण होगा। और यह सब नैतिकता वास्तव में मानव की प्राकृतिक स्थितियाँ और भावनाएं हैं और तभी आचरण के नाम से जाने जाते हैं जब स्थान और अवसर के अनुसार इरादा के बिना उन को प्रयोग किया जाए। (इस्लामी उसूल की फिलास्फी रूहानी खज़ायन जिल्द 10 पष्ठ 333) एक आदत के अनुसार नहीं बल्कि प्रत्येक आचरण जो है उस को इस दृष्टि से प्रयोग किया जाए कि इस के नेक नतीजे पैदा हों। कई बार सज़ा देनी पड़ती है तो सज़ा इस इरादे से के नेक नतीजे पैदा हों।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उच्च आचरण दिखाने की विभिन्न हालतों का वर्णन करते हुए फरमाया कि उच्च हालतों का दो अवस्थाओं में पता चलता है। परीक्षाओं में भी और तंगी की हालत में भी, परीक्षाओं और तंगी की अवस्था में और इनाम और सुविधा की अवस्था में। परीक्षा में जो धैर्य और अल्लाह तआला की रज़ा की नमूना दिखाए वह उच्च आचरण का मालिक है और इनाम और हुकूमत में जो विनम्रता और इंसाफ करे वह उच्च आचरण का मालिक कहला सकता है। और यह दोनों हालतें हमारे नबी करीं सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में रौशन हो कर प्रकट होती हैं। जैसा कि मैं ने पहले भी कही है कि किस प्रकार मक्का विजय के अवसर पर अपनी जान के दुश्मनों को भा माफ फरमा दिया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"इंसान की नैतिकता हमेशा दो रंगों में प्रकट कर सकते हैं या परीक्षा की स्थिति में, या पुरस्कार की स्थिति में। यदि केवल एक ही पक्ष हो और दूसरा न हो तो नैतिकता का पता नहीं चल सकता। चूंकि ख़ुदा तआला ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श पूर्ण करने थे इसलिए कुछ हिस्सा आप की मक्की है और कुछ मदनी। मक्की का दुश्मनों के बड़े बड़े कष्टों पर धैर्य का नमूना दिखाया और बावजूद उन लोगों के बहुत अधिक कठोरता व्यवहार करने के आप उन से नर्मी और दया से पेश आते रहे और जो सन्देश ख़ुदा तआला की तरफ से लाए थे इस की तब्लीग़ में कोताही न की। फिर मदीना में जब आप को तरक्की प्राप्त हुई और वही दुश्मन गिरफतार हो कर पेश हुए तो उन में से अधिक को माफ फरमा दिया। बावजूद बदला की ताकत के बदला न लिया।

(मल्फूज़ात भाग 6 पृष्ठ 195,196 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श का और अधिक वर्णन करते हुए आप फरमाते हैं कि

इन बातों को बहुत अधिक ध्यान से सुनना चाहिए। प्राय: आदिमयों को मैंने देखा और ध्यान से देखा है कि कुछ दान तो करते हैं परन्तु साथ ही ग़ुस्सा वाले भी होते हैं। (बहुत दान करने वाले हैं लोगों को बहुत अधिक देते हैं परन्तु साथ ही क्रोध भी आ जाता है और थोड़ी थोड़ी सी बात पर नाराज़गी भी आ जाती है। किसी को कुछ दिया तो फिर इस के बाद उपकार भी जता दिया। नाराज़गी हुई तो) फरमाया कि " कुछ दयावान तो हैं परन्तु कंजूस हैं। कुछ क्रोध और ग़ुस्सा की अवस्था में डण्डे मार मार कर घायल कर देते हैं परन्तु विनम्रता और विनय नाम को भी नहीं....." (विनम्रता है विनय है परन्तु बहादुरी नाम को भी नहीं। थोड़ा सा कोई अवसर आए तो कायरता दिखाने लग जाते हैं) फरमाया कि प्रत्येक इसांन सारे गुणों को जमा करने वाला भी नहीं होता। यह ठीक है परन्तु साथ यह कि" बिल्कुल वंचित भी नहीं है" और फिर आ ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वर्णन करते हुए फरमाया कि इन आचरणों के बारे में सब से उत्तम नमूना उदाहरण आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की है जो सारे आचरणों के मालिक थे इसी लिए आप की शान में फरमाया اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ

(उद्धरित मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 132-133 प्रकाशन 1985 ई संस्करण यू. के)

अत: कष्टों के समय में भी आप ने आचरण दिखलाए और धैर्य का वह प्रदर्शन किया कि दुनिया हैरान हो गई और सारे अरब की हुकूमत मिली जैसा कि फरमाया मैंने तो सारे अत्याचार करने वालों को माफ फरमा दिया। इसलिए नैतिकता के उच्च मापदण्ड में जो प्रत्येक अवस्था में एक वास्तविक मुसलमान को, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मानने वाले को हमेशा सामने रखने चाहिए और दिखाने चाहिए। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारी किस प्रकार मार्गदर्शन फरमाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श के बारे में फरमाते हुए फरमाते हैं कि ये उच्च आदर्श इस प्रकार के थे कि जिन्होंने लोगों को अपना दीवाना बना लिया। और एक चमत्कार दिखाया। फिर आप हमें बताते हैं कि अगर तुम इस सुन्नत पर चलते हुए अपने आचरण को अच्छे कर लो और हर आचरण को यथा स्थान और अवसर के अनुसार उपयोग करो तो तुम भी चमत्कार दिखाने वाले बन सकते हो।

आप फरमाते हैं, "चमत्कारों पर तो किसी ने किसी रूप से लोग आरोप लगा देते हैं लेकिन नैतिक हालत एक ऐसी करामत है जिस पर कोई उंगली नहीं रख सकता और यही कारण है कि हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सबसे

बड़ा और शक्तिशाली चमत्कार आचरण का ही दिया गया था । जैसे फरमाया اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ। फरमाया, "यूं तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रत्येक प्रकार के चमत्कार के प्रमाण में समस्त नबियों के चमत्कारों से बढ़े हुए हैं परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण के चमत्कार का नम्बर से सब से पहले है जिस का उदाहरण दुनिया का इतिहास नहीं बता सकता। और न पेश कर सकेगी।" फरमाया "मैं समझता हूं कि प्रत्येक आदमी जो अपने बुरे आचरण को छोड़ कर बुरी आदतों को छोड़ कर अच्छी आदतों को धारण करता है इस के लिए वही करामत है"(तो यह बहुत बड़ी करामत है अगर इस तरह कर लो कि बुरे आचरण को छोड़ दो और नेकियां अपने अन्दर पैदा कर लो) "जैसे एक बहुत ही सख्त मिज़ाज और क्रोध वाला इन आदतों को छोड़ता है और दया और नर्मी को धारण करता है या कंजूसी को छोड़ कर उपकार करता है और अपने हाथ को रोके रखने के स्थान पर और हसद के स्थान पर सहानुभूति करता है तो नि:सन्देह यह करामत है"(मिज़ाज का सख्त आदमी है। क्रोध वाला है। ये बुरी आदतें हैं उन को छोड़ कर नर्मी और माफ करने की आदत अपने अन्दर पैदा करता है या कंजूसी को छोड़ कर खर्च करता है अपने हाथ को रोक रकने का स्थान पर हसद के स्थान पर सहानुभूति करता है तो अगर इस प्रकार का परिवर्तन पैदा कर लो तो यह अक करामत हो जाती है और फिर नतीजे भी दिखाई देते हैं।)" इसी प्रकार स्वार्थ और दिखावे को छोड़ कर जब विनम्रता और विनय धारण करता है"(अपने आप की प्रशंसा करना या अपने आप की बढ़ाई करना या प्रशंसा करवाना इन बातों को छोड़ कर विनम्रता धारण करो तो यह करामत बन जाती है।)

फरमाया कि "अत: तुम में से कौन है जो नहीं चाहता कि करामती बन जाए। मैं जानता हूं कि हर एक यही चाहता है। तो बस सही एक जीवित और चिरस्थायी करामत है। इंसान नैतिक अवस्था को ठीक कर ले क्योंकि यह (एक) ऐसी करामत है जिस का प्रभाव कभी नष्ट नहीं होता बल्कि लाभ दूर तक पहुंचता है। मोमिन को चाहिए को ख़लक (सृष्टि) और ख़लिक(अल्लाह तआला) के निकट करामत वाता बन जाए। बहुत से शराबी और एश करने वाले देखें गए हैं जो किसी करामत को मानने वाले नहीं हैं परन्तु नैतिक अवस्था को देख कर उन्होंने भी सिर को झुका लिया और स्वीकार करने के दूसरा मार्ग नहीं मिला। बहुत से लोगों की जीवनी में इस बात को पाओगे कि उन्होंने नैतिक अवस्था को ही देखकर इस्लाम को स्वीकार कर लिया।"(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 141,142 प्रकाशन 1985 ई यू, के) ज़ाहिरी तौर पर आमतौर से दुनियादारी भी नैतिकता दिखा रहे होते हैं परन्तु जिस बात को नैतिकता का नाम दिया जाता है वह वास्तव में प्राय: एक दिखावा होता है और केवल अपने आप को अच्छा साबित करने के लिए यह कर रहे होते हैं जहां अपने निजी हित भी न हों वहाँ अपने आप को अच्छा सिद्ध करते हैं। दिल में कुछ और होता है या फिर कई बार किसी बड़े अधिकारी के सामने या बड़े अमीर आदमी के सामने इस तरह व्यक्त करते हैं कि बड़े अच्छे आचरण हैं हालांकि वे मदाहनत (चापलूसी) है। ऐसी चीज़ है जो कमज़ोरी है और डर या भय के कारण इस प्रकार की बातें कर रहे होते हैं। आपने फरमाया कि यह इस्लाम की शिक्षा यह नहीं है क्योंकि यह इस्लाम की वास्तविक नैतिकता नहीं है। बल्कि उच्च आचरण यह है कि दिल यह व्यक्त हो रहा हो, अगर सहानुभूति है तो हृदय से हो, अगर अन्य बातों का प्रकटन हो रहा हो तो दिल से हो रहा हो।

अत: इस बात को समझाते हुए, आपने एक अवसर पर फरमया: "नैतिकता दो प्रकार की है। एक तो वे हैं जो आजकल के नौ शिक्षित पेश करते हैं कि मुलाकात आदि में ज़बान से चापलूसी और मदाहना से पेश आते हैं और दिल में पाखंड और वैर भरा होता है। यह आचरण कुरआन शरीफ के ख़िलाफ हैं।

दूसरी किस्म नैतिकता की यह है सच्ची सहानुभूति करे। दिल में ढोंग न हो और चापलूसी और दिखावे से काम न ले। जैसे ख़ुदा तआला फरमाता है اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَ الْاِحْسَانِ وَ اِيْتَآئِ ذِى الْقُرْبٰى (अन्नहल :91) तो यह पूर्ण तरीका है।" (न्याय करो। न्याय से काम करो। जो तथ्य है उसे वर्णन करो। फिर ऐसी अवस्थाएं पैदा होती हैं जहां उपकार करने की आवश्यकता है, और फिर उस से आगे बढ़ो, इस तरह से दूसरों से व्यवहार करो ऐसे आचरण दिखाओ जिस तरह एक माँ अपने बच्चे से करती है या कोई बहुत क़रीबी रिश्तेदार क़रीबी रिश्ते से करता है।) तो फरमाया कि "यह पूर्ण तरीका है और प्रत्येक पूर्ण तरीका और हिदायत ख़ुदा के कलाम में मौजूद है जो इससे मुंह मोड़ते हैं वह अन्य स्थान पर हिदायत नहीं पा सकते। अच्छी शिक्षा अपना प्रभाव डालने के लिए दिल की पवित्रता को चाहती है। जो लोग इस से दूर हैं अगर गहरी नज़र से उन को देखोगे तो उन में ज़रूर गंद नज़र आएगा।

(मल्फूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 200 संस्करण 1985 ई यू.के)

अत: इस के लिए हृदय की पवित्रता की आवश्यकता है अपने आप को ख़ुदा तआला की ख़ुशी और उसकी आज्ञाओं पर चलाने की ज़रूरत है फरमाया कि, "जीवन पर भरोसा नहीं नमाज़,(और) सच्चाई में तरक्की करो।(मलफूज़ात भाग 6 पृष्ठ 200 प्रकाशन 1985 ई यू. के) अपनी इबादतों में तरक्की करो। अपनी सच्चाई की गुणवत्ता में वृद्धि करो। अपनी हर बात में सच्चाई पैदा करो। कुछ लोग पूछते हैं कि अच्छे कर्म क्या हैं? कुछ का मानना है कि केवल ज़हरी नमाज़ें और इबादत ही नेकी है या साधारण आचरण दिखा दिए तो वही बड़ा नेकी होगी हैं और कई अन्य बुनियादी आचरणों की परवाह नहीं करते। इस को बहुत ही सुंदर तरीके से व्यक्त करते हुए, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि:

"नैतिकता दूसरे अच्छे कर्मों की कुंजी है।" (एक चाबी है इसकी) "जो लोग नैतिकता में सुधार नहीं करते हैं वे धीरे-धीरे कृतघ्न हो जाते हैं।" (इन में फिर कोई भलाई नहीं होती लाभ नहीं पहुंचता।) फरमाया कि, "मेरा तो यह धर्म यह है कि दुनिया में सब कुछ काम आता है।" ज़हर और गन्दगी भी काम में आती है । असट्राकीना भी काम आता है तंत्रिकाओं पर आपना प्रभाव डालता है लेकिन जो व्यक्ति उच्च नैतिकता को प्राप्त करके लाभदायक नहीं बनता " (यह ज़हर भी काम आ सकते हैं। गंद भी काम आ सकता है लेकिन उच्च नैतिकता को प्राप्त करता है। यदि इंसान ऐसा नहीं करता और लोगों को लाभ नहीं पहुंचाता) तो, फरमाया कि, "ऐसा हो जाता है कि वह किसी भी काम नहीं कर सकता है।" (अत: इंसान केवल तभी काम कर सकता है जब उस में उच्च आचरण हों।)

फरमाते हैं कि: "एक मरे हुए जानवर से भी बदतर हो जाता है क्योंकि उस की तो खाल और हड्डियां भी काम आ जाती हैं, यह बहुत अधिक काम नहीं करता है, और यही वह जगह है जहां इंसान بَلْ هُمْ اَضَلّ (अल-अराफा: 180)के समरूप बन जाता है। "(बहुत गरी हुई चीज़ बन जाता है ।)" अत: याद रखो कि चरित्र का सुधार बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि नेकियों की मां आचरण ही है।

"(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 76 संस्करण 1985 ई यू. के)

यदि नैतिकता पैदा होगी तो अन्य नेकियां करने की भी तौफीक मिलेगी। रोज़ना के मामलों में ये नैतिकता कैसे प्रकट होती है? आप फरमाते हैं कि " कुछ लोगों की आदत होती है कि मांगने वाले को देखकर चिढ़ जाते हैं।" (कोई मांगने वाला आ जाए तो उसे देखकर चिढ़ जाते हैं। कोई जरूरतमंद आए तो उसे देखकर चिढ़ जाते हैं) "और कुछ मौलवियत की रग हो तो उसे बजाय कुछ देने के सवाल के मस्ले समझाना शुरू कर देते हैं। " (मस्ले वर्णन करने शुरू कर देते हैं बजाय इसके कि उसे दें। मांगने वाला आया है तो वह उससे ज्ञान की बातें शुरू कर देते हैं या सवाल करने की बुराई या अच्छाई वर्णन करने लग जाते हैं) फरमाया कि उस पर मौलिवयत को रौब जमा कर कई बार बहुत अधिक सुस्त भी कह देते हैं। अफसोस उन लोगों को अक्ल नहीं और सोचने का माद्दा नहीं रखते जो एक नेक दिल और अच्छे इंसान को मिलता है इतना नहीं सोचते कि अगर मांगने वाला बावजूद सेहत के मांगता है तो वह ख़ुद गुनाह करता है। (यदि कोई मांगने वाला ऐसा करता है जो सेहत के बावजूद सवाल करने आया है तो उसका गुनाह उसके सिर है। तुम्हारे पास कुछ है, मांग रहा है तो उसे दे दो) "उसे कुछ देने में कोई गुनाह नहीं है" बल्कि हदीस शरीफ में لَوْ اَتَاكَ رَاكِبًا के शब्द हैं। अर्थात चाहे प्रश्नकर्ता सवार होकर भी आवे तो भी कुछ दे देना चाहिए और कुरआन शरीफ में وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ (अज्जुहा: 11) का आदेश आया है कि मांगने वाले को मत झिड़क। " फरमाया कि " इसमें यह कोई स्पष्ट नहीं किया गिया कि अमुक प्रकार कि मांगने वाले को मत झिड़को। इसलिए याद रखो कि मांगने वाले को मत झिड़को। क्योंकि इस से एक प्रकार का बुरा आचरण को बीज बोया जाता है। आचरण यही चाहता है कि मांगने वाले पर जल्दी से नाराज़ न हो जाओ यह शैतान की इच्छा है कि वह इस प्रकार तुम को नेकी से वंचित करे और बुराई का वारिस बना दे।

फिर आप फरमाते हैं: "ध्यान दो कि एक नेकी करने से दूसरी नेकी पैदा होती है और इसी तरह से एक बुराई एक और बुराई का रण होती है जैसे एक चीज़ दूसरे को खींचती इसी प्रकार ख़ुदा तआला से खींचने का बात है।(यह आकर्षण की बात है) प्रत्येक काम में रखा हुआ है। अत: जब मांगने वाले से तो नर्मी के साथ व्यवहार करेगा और इस तरह से चारित्रिक सदका दे देगा तो इस तरीक से कंजूसी दूर हो कर दूसरी नेकी भी कर लेगा। (जो दिल में एक रोक पैदा हो जाती है अर्थात जब आप पेश करेंगे और ऐसे नैतिक दान दे देंगे) यह भी अच्छा होगा। "(जो दिल में बंद हो जाता है वह दूर हो जाएगा और फिर अन्य अच्छे कर्म भी फायदेमंद होंगे)" और उसे

कुछ दे भी देगा।" (मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 75.76 संस्करण 1985 ई)

फिर हमारे समाज में यह सवाल आमतौर पर माता-पिता के बारे में होता है। यदि माता पिता अहमदी नहीं या विरोध कर रहे हैं, तो उनका सम्मान आपने कैसे करना है। आप ने शेख़ अब्दुर्रहमान साहिब कादियानी को उन के पिता के बार में पूछने पर नसीहत फरमाई "उनके लिए दुआ किया करो।" हर तरह और यथा सम्भव माता पिता की दिलजोई करनी चाहिए और उन्हें पहले से हज़ारों गुणा अधिक कुछ अधिक नैतिकता और अपना पवित्र नमूना दिखला कर इस्लाम का सच्चाई का मानने वाला बनाना चाहिए।" (क्योंकि वह मुसलमान नहीं थे इसलिए उन्हें अपना नमूना दिखाओ ताकि वह इस्लाम की सच्चाई के मानने वाले हो जाएं।) "नैतिक नमूना इस प्रकार का चमत्कार है कि कोई अन्य चमत्कार इस का मुकाबला नहीं कर सकता। सच्चे इस्लाम का यह स्तर है कि इस से मनुष्य उच्च स्तर के आचरण पर आ जाता है और वह एक विशेष व्यक्ति हो जाता है। शायद ख़ुदा तआला तुम्हारे द्वारा इस्लाम की मुहब्बत उन के दिल में डाले। इस्लाम माता-पिता की सेवा करने से नहीं रोकता। सांसिरक मामलों में जिन से धर्म का नुकसान नहीं होता उन की हर तरह से पूरी आज्ञाकारिता करनी चाहिए। दिल और जान से उन की सेवा करो।

(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 175 हाशिया नम्बर 1 संस्करण 1985 ई यू.के)

आपने एक अवसर पर फरमाया कि आचरण ही हैं जो मनुष्य और जानवरों के बीच अंतर करते हैं। इस बात को वर्णन करते हुए आप ने फरमाया कि

प्रथन जानवर अवस्था और आचरण में अन्तर नहीं कर सकता और जो कुछ आगे आता है और जितना आता है खाता है जैसा कुत्ता इतना खाता है कि अन्त में उलटी कर देता है(क्या अवस्था होनी चाहिए। किस प्रकार होना चाहिए. और इस में कोई अन्तर नहीं करते। यहां हम ने देखा है कि कुछ लोगों का यही हाल होता है। लालच ख़त्म ही नहीं होती और जायज़ और नाजायज़ तरीके से चाहे वह खाना हो या लोगों का माल हो खाने की कोशिश करते हैं।

फरमाया कि दूसरा यह कि जानवर हलाल और हराम में अन्तर नहीं करते(एक तो यह कि यह अन्तर नहीं पता कि किस अवस्था में रहना है। और किस प्रकार रहना है रूहानियत क्या होती है और किस सीमा तक जायज़ माध्यम से कमाने और खाने की आज्ञा देती है। सिर्फ यही नहीं के जेबें भरते चले जाओ और अपने ख़ज़ाने भरते चले जाओ बल्कि इस का अंदाज़ा होना चाहिए दूसरी बात यह है कि जानवर हलाल और हराम में अन्तर नहीं करता। फरमाया कि एक बैल(जैसे बैल का उदाहरण दिया।) कभी यह अन्तर नहीं करता कि पड़ोसी का खेत है इस में न जाऊं।(खुला बैल है जानवर है खेत चर रहा है अगर बाड़ नहीं लगी तो दूसरे के खेत में चला जाएगा उस को कोई अन्तर नहीं है तो फरमाया। कि एसा ही प्रत्येक काम जो खाने के लिहाज़ से हो नहीं करता। फरमाया कि यह लोग तो चरित्र के उसूलूं को तोड़ते हैं और परवाह नहीं करते कि मानो इंसान नहीं सफाई और पवित्रता की तो यह अवस्था (है कि) अरबों में मुर्दा कुत्ता खा लेते थे(फिर अगर आप ने उदाहरण दिया कि इस युग में भी लोग खा लेते है। फिर फरमाते हैं कि) यतीमों का माल खाने में कोई शंका नहीं। जैसे यतीम की घास गाय के सामने रख दी जाए नि:संकोच खा लेगी(अर्थात के गाय जो है इस के सामने गास रख दो चाहे वह जायज़ तरीके से आया है या नाजायज़ तरीके से तो गाय ने तो खा लेना है इसी तरह से कुछ लोग यतीमों का माल जायज़ और नाजायज़ तरीक़े से खा लेते हैं। फरमाया कि इसी प्रकार इन लोगों की अवस्था है यही अर्थ हैं وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ (मुहम्मद 13) उन का ठिकाना जहन्नुम होगा। (जब नाजायज़ तरीके से खाते हैं तो फिर इस प्रकार के इंसानों का ठिकाना जहन्नुम बन जाता है) फरमाया कि अत: याद रखो कि दो पक्ष है एक अल्लाह तआला के सम्मान का। जो उस के ख़िलाफ है वह भी आचरण के ख़िलाफ है और दूसरा अल्लाह तआला के बन्दों पर रहम का। अत: जो मानव जाति के विरुद्ध हो वह भी आचरण के विरुद्ध है। (अल्लाह तआला के अधिकार अदा नहीं करते। उस की महानता नहीं मानते उस की इबादत नहीं करते उस की बातों की तरफ ध्यान नहीं सुनते। उस की प्रसन्नता को प्राप्त करने की कोशिश नहीं करते तो यह भी आचरण के ख़िलाफ है। और अगर लोगों के अधिकार अदा नहीं करते नाजायज़ तरीकों से उन के माल खाते हौ नुकसान पहुंचाने के कोशिश करते हो या अन्य तरीके से बुरा आचरण दिखाते हो तो यह भी आचरण के विरुद्ध है) आप फरमाते हैं अफसोस बहुत थोड़े लोग हैं जो उन बातों पर जो इंसान की ज़िन्दगी का मूल उद्देश्य और लक्ष्य हैं ध्यान करते हैं।

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 78,79 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर, एक बुराई अहंकार की है जो नेकियों से वंचित कर देती है, ख़ुदा तआला की नाराज़गी का कारण बना देती है। आप फरमाते हैं "सूफी कहते हैं कि इंसान के अन्दर बुरे आचरण के बहुत से जिन्न होते हैं(घटिया आचरण के बहुत से जिन्न होते हैं जो इंसान के अन्दर होते हैं।) "और जब वे निकलने लगते हैं तो निकतलेत रहते हैं परन्तु सब से अन्तिम जिन्न अहंकार का होता है जो उस में रहता है और ख़ुदा तआला के फज़ल और इंसान की सच्ची कोशिश और दुआओं से निकलता है फरमाया कि बहुत से आदमी अपने आप को विनम्र समझते हैं(बहुत विनम्रता दिखाते हैं और समझते हैं कि हम बहुत विनम्र है) परन्तु उन में भी किसी न किसी प्रकार का अंहकार होता है इसलिए अंहकार की सूक्ष्म से सूक्ष्म किस्मों से बचना चाहिए। कई बार यह अंहकार धन से पैदा होता है दौलत मन्द अहंकारी दूसरों को कंगाल समझता है और कहता है कि यह कौन है जो मेरा मुकाबला करे। कई बार ख़ानदान और ज़ात का अहंकार होता है। समझता है कि मेरी ज़ात बड़ी है और यह छोटी ज़ात का है। कई बार अंहकार ज्ञान का भी होता है। एक आदमी ग़लत बोलता है तो यह शीघ्र उस की बुराई को पकड़ता है और शोर मचाता है कि इस को तो एक शब्द भी सहीह बोलना नहीं आता। अत: विभिन्न प्रकार के अंहकार होते हैं और यह सब के सब इंसान को नेकियों से वंचित कर देते हैं और लोगों को लाभ पहुंचाने से रोक देते हैं। इन से बचना चाहिए।

(मलफूज़ात भाग 6 पृष्ठ 402 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर आप फरमाते हैं कि "किसी को आचरण की कोई शक्ति नहीं दी गई परन्तु उस को बहुत सी नेकियों की तौफीक़ मिली। आचरण का छोड़ देना ही बुराई और गुनाह है। (फरमाया कि नेकियों की इंसान को तौफीक़ मिलती है और फरमाया कि आचरण का छोड़ देना ही बुराई और गुनाह है। जब आचरण को छोड़ दोगे तो यह बुराई और गुनाह बन जाता है। और फिर इस से यह नेकियों की तौफीक भी समाप्त हो जाती है) फरमाया " एक आदमी जो जैसे व्यभिचार करता है उस को पता नहीं कि उस औरत के पति को कितना सदमा पहुंचता है।"(किसी औरत के साथ आगर ज़ना किया है और वह शादीशुदा थी।)" अब अगर यह उस तकलीफ और सदमा को सहन कर सकता है उस को नैतिकता से हिस्सा प्राप्त होता है तो इसे बुरे काम को करने वाला न होता। अगर इस प्रकार के बुरे इंसान को यह पता होता कि इस बुरे काम के करने के क्या क्या बुरे परिणाम निकलते हैं तो इस बुरे काम से रुक जाता।" फरमाया कि एक आदमी जो चोरी करता है हतभागा इतना भी तो नहीं करता कि रात के खाने के लिए(किसी ग़रीब आदमी के घर में चोरी कर लेता है उस के लिए) ही छोड़ जोए। प्राय: देखा गया है कि एक ग़रीब आदमी का सालों की मेहनत को मलयामेट कर देता है।" फिर आप फरमाते हैं" अब अगर इन हालतों को अनुभव करता और नैतिक हालत से अन्धा न होता तो क्यों चोरी करता। आए दिन आख़बारों में दर्दनाक मौतों की ख़बर पढ़ने को मिलती रहती हैं कि अमुक बच्चा ज़ावर के लालच में मारा गया। अमुक स्थान पर किसी औरत को कत्ल कर दिया गया..... अब सोच कर देखो कि अगर चारित्रिक अवस्था ठीक होती तो एसी मुसीबतें क्यों आईं? संभव है कि अपने जैसे इंसान पर मुसीबत आए और यह अनुभव न करे।"(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 77 प्रकाशन 1985 ई यू. के) यदि यह नैतिकता ही न हों इहसास ही न हो अल्लाह तआला का भय ही न हो तो तभी यह अवस्था पैदा होती है। नहीं तो अगर अल्लाह तआला का ख़ौफ पैदा हो या इंसानियत में हो तो इस प्रकार की हरकतें न करें।

अपनी जमाअत को नसीहत करते हुए फरमाया कि "जो कोई अपने पड़ोसी को अपने चरित्र में परिवर्तन दिखाता है कि पहले क्या था और अब क्या है मानो वह एक करामत दिखाता है उस का प्रभाव पड़ोसी पर बहुत उच्च स्तर का होता है हमारी जमाअत पर आरोप लगाते हैं कि हम नहीं जानते कि क्या तरक्की हो गई है(लोग आरोप लगाते हैं कि हमें पता है कि जमाअत में क्या तरक्की हो गई है।) और आरोप लगाते हैं कि अकारण क्रोध करते हैं(यह आरोप भी हम पर लगाते हैं कि क्रोध करते हैं और झूठ भी बोलते हैं।) "क्या उन के लिए यह बात लज्जा का कारण नहीं कि इंसान अच्छा समझ कर इस सिलसिला में आया था"(इस प्रकार के लोग जो इस प्रकार की हरकतें करते हैं तो फिर उन को लज्जित होना चाहिए) फरमाया कि जिस पर एक नेक लड़का अपने पिता के नेक नाम को प्रकट करता है क्योंकि बैअत वाला बेटे के आदेश में आता है....." (इसलिए तुम लोग भी जो बैअत के आदेश में आए हुए हो तो लोग जो आरोप लगाते हैं कि ये हुआ है। वे आरोप तुम्हारे पर सच साबित नहीं होने चाहिए।) फरमाया " रूहानी बाप आसमान पर ले जाता है।"(जिस प्रकार शारीरिक बाप ज़मीन पर लाने का कारण होता है इसी प्रकार रूहानी बाप आसमान पर ले जाता है) "और उस वास्तविक केन्द्र की तरफ मार्गदर्शन करता है। फरमाया

कि क्या आप पसन्द करते हैं कि कोई बेटा अपने बाप को बदनाम करे।? वेश्याओं की यहां जाए? और जुआ खेलता रहे। शराब पीए या इस प्रकार का बुरे काम करे जो पिता के अपमान का कारण हों" फरमाया कि " मैं जानता हूं कि कोई आदमी इस प्रकार नहीं हो सकता जो इस काम को पसन्द करे। परन्तु जब वह हतभागा लड़का करता है तो फिर लोगों की ज़बान बन्द नहीं हो सकती। लोग उस के बाप की तरफ सम्बन्ध कर के कहेंगे कि यह अमुक का बेटा अमुक बुरे काम करता है। अत: वह हतभागा बेटा खुद ही बाप की बदनामी की कारण हो जाता है। इसी तरह से जब कोई आदमी एक सिलसिला में शामिल होता है और इस सिलसिला का सम्मान और इज्ज़त को कायम नहीं रखता और उस के विरुद्ध करता है तो अल्लाह के निकट गिरफत के योग्य होता है।"(अल्लाह तआला की पकड़ में आ जाएगा।)क्योंकि वह सिर्फ ख़ुद को नहीं मारता है, परन्तु वह दूसरों के लिए एक बुरा उदाहरण होकर उन्हें मुक्ति और मार्गदर्शन के रास्ते से वंचित रखता है।"(बुरा नमूना लोग जो देखेंगे तो उन को फिर इस जमाअत से दूरी पैदा हो जाएगी। वे निकट नहीं आंएगे। और फिर इस बरकत से जमाअत में शामिल होने की बरकत से उस से वंचित हो जाएंगे।) "अत: जहां तक आप लोगों की ताकत है ख़ुदा तआला से मदद मांगो अपनी पूरी ताकत और हिम्मत से अपनी कमज़ोरियों को दूर करने की कोशिश करते रहें। जहां थक जाओ वहां सच्चाई और विश्वास से हाथ उठाओ क्योंकि विनम्रता और विनय से उठाए हुए हाथ जो सच्चाई और विश्वास की तहरीक से उठते हैं खाली वापस नहीं होते। हम अनुभव से कहते हैं कि हमारी हज़ारों दुआएं स्वीकार हुई हैं और हो रही हैं।" फरमाया कि "यह एक यकीनी बात है कि अगर कोई आदमी अपने अन्दर अपनी जाति का जोश नहीं पाता तो वह कंजूस है।" (अगर दूसरे इंसान का सहानुभूति का जोश नहीं तो फिर वह कंजूस है।) "अगर मैं एक रास्ता देखूं जिस में भलाई और नेकी है तो मेरा कर्तव्य है कि मैं पुकार कर लोगों को बताऊं। इस बात की परवाह नहीं होनी चाहिए कि कौन इस पर अनुकरण करता है अथवा नहीं।"

(मल्फूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 146-147 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर आप फरमाते हैं कि "जब तक मनुष्य मुजाहद: (कोशिश) न करेगा, दुआ से काम न लेगा, वह ग़मरह (पर्दा) जो दिल में पड़ जाता है दूर नहीं हो सकता। अत: अल्लाह तआला ने फरमाया है اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ (सूरह अर्द 12)कि अल्लाह तआला प्रत्येक प्रकार की आफत और बला को जो क़ौम पर आती है दूर नहीं करता जब तक कि ख़ुद कौम उस को दूर करने की कोशिश न करे। हिम्मत न करे बहादुरी से काम न ले। यह अल्लाह तआला के एक परिवर्तित न होने वाला नियम है وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا (अहज़ाब: 63) अत: हमारी जमाअत हो या कोई हो वह नैतिकता में परिवर्तन उसी समय कर सकते हैं जब मुजाहिदा और दुआ से काम लें वरना सम्भव नहीं है। (मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 137 संस्करण 1985 यू. के)

अल्लाह तआला हमें रसूल के आदर्श पर चलते हुए अपने आचरण को प्रत्येक दृष्टि से और प्रत्येक अवसर पर और प्रत्येक अवस्था में बेहतर से बेहतर करने की तौफीक प्रदान करे। हमारी नैतिकता की गुणवत्ता को अल्लाह तआला की ख़ुशी हासिल करने के लिए हों, न कि दुनिया के दिखावे के लिए। सृष्टि की सच्ची सहानुभूति हमारे दिलों में पैदा हो। हम तक्वा के मानकों को बढ़ाने वाले हों। हम ने युग इमाम को माना है तो हमारी सोच हर समय यह रहे कि हमारा कोई अमल इस्लाम, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बदनामी का कारण न बने बल्कि इस्लाम की सुंदर शिक्षा हम फैलाने वाले हों और दुनिया को इससे प्रभावित करने वाले हों और इससे बढ़कर यह कि हम अपने आचरण के मानकों को बढ़ाने की हर समय कोशिश करते रहें और अल्लाह तआला के आगे झुक कर दुआ से काम लेते हुए अल्लाह तआला से उस को प्राप्त करने के लिए मदद मांगने वाले हों।

नमाज़ों के बाद मैं एक नमाज़े जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा जो आदरणीय शेख अब्दुल मजीद साहब इब्न शेख अब्दुल हमीद साहिब क्षेत्र डिफेनस सोसायटी कराची का है। 15 फरवरी को 88 वर्ष की आयु में 1 उन की मृत्यु हो गई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके परिवार में अहमदियत उनके दादा हज़रत शेख नूर अहमद साहिब जालंधर के माध्यम से आई थी जिनका ज़िक्र हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तक अंजामे आथम में 313 सहाबा की सूची में 242 नंबर पर शेख नूर अहमद साहिब जालंधर हाल मम्बासह के नाम से किया है? (अंजामे आथम, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 11 पृष्ठ 328) यह 1929 ई में जालंधर में पैदा हुए। तालीमुल इस्लाम कॉलेज कादियान से एफ.एस.सी (FSC) करने के बाद आप ने गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से केमिकल इंजीनियरिंग में एम.एस.सी (MSC) की और कॉलेज में टॉप भी किया। फिर 1951 ई से 1953 ई तक, यहां यूके के सरे विश्वविद्यालय में मेटलर्जिकल इंजीनियरिंग का अध्ययन किया। और फिर आपको कराची में जमाअत की सेवा करने का अवसर मिला। सेक्रेटरी जायदाद, सदर सहायता कमटी, क्षेत्र के अध्यक्ष थे। उप अमीर कराची के रूप में सेवा की तौफीक मिली। मज्लिस तहरीक जदीद केंद्रीय के सदस्य थे। आप की औलाद में एक बेटी हैं सलमा तारिक जो तारिक सज्जाद साहिब की पत्नी और दो नवासे और एक निवासी हैं।

उनके नवासे लिखते हैं कि कादियान में बुज़र्गों की संगत में रह कर बचपन से ही अल्लाह तआला के साथ एक विशेष संबंध था और कहते हैं मैट्रिक की परीक्षा में अंग्रेज़ी का पर्चा अच्छा नहीं हुआ तो यह मस्जिद की तरफ आ रहे थे तो रास्ते में हजरत मौलाना शेर अली साहिब मिले। वह मस्जिद से बाहर निकल रहे थे। मौलाना साहिब ने परीक्षा के बारे में पूछा। उन्होंने कहा कि पर्चा अच्छा नहीं हुआ है। मौलाना शेर अली साहिब ने वहीं हाथ उठाया और दुआ की और उन को कहा कि आप पास हो जाएंगे। ख़ुश-ख़बरी दी। कहते हैं कि उसके बाद दुआ ऐसी कुबूल हुई कि मैं हर परीक्षा में पास होता चला गया। तंगी और ख़ुशी की विभिन्न स्थितियां उन पर आईं। यहाँ से जाने के बाद विभिन्न नौकरियां भी उन्होंने कीं और जमाअत के विरोध की वजह से भी या अधिकारियों के आपस के कुछ ग़लत व्यवहार के कारण उन्हें नौकरियों से निकाला जाता रहा। अंत में उन्होंने व्यवसाय शुरू किया और व्यापार में एक वादा किया कि वह अपने खर्चों के लिए थोड़ा सा रखेंगे। बाकी सब कुछ जमाअत को प्रस्तुत कर दिया करूंगा। और अल्लाह तआला की कृपा से उन्होंने अपना वादा जो अल्लाह तआला के साथ किया था उसे सारा जीवन निभाया। उन्होंने व्यापार किया है कारखाने लगाए। उस को जो भी लाभ होता उस से बहुत अधिक उन्होंने जमाअत पर खर्च किया और जमाअत को हमेशा चन्दा देते रहे। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि ने जब एम.टी.ए का आरम्भ किया तो उन्होंने तुरन्त एक करोड़ रुपये अदा किया। इसी तरह रशिया में एक बार मस्जिद बनाने का विचार पैदा हुआ था तो उस समय तहरीक से पहले अहमदियों का एक रूसी वफात यहाँ आ के हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और वहाँ बातें हो रही थीं तो उसी दौरान हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि को निजी सचिव ने बताया कि शेख साहिब ने बिना किसी तहरीक के यह बड़ी रकम वहां मस्जिद के लिए दी है। और निजी सचिव ने उनसे कहा कि इस पर हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि ने बहुत प्रसन्नता का वर्णन किया था। इसी तरह वहाँ के मुरब्बी साहिब लिखते हैं कि 2010 ई में जब दारुल ज़िक्रे और मॉडल टाउन में 28 मई की घटना हुई है तो वह कहते हैं कि इसी दिन शाम को कार्यालय गया तो देखा कि वहाँ के सचिव माल एक रसीद काट रहे थे और मैं देख रहा था कि शून्य पर शून्य डाल रहे थे मैंने उनसे पूछा कि आप ग़लती से तो नहीं कर रहे तो उन्होंने कहा नहीं बल्कि अभी शेख़ साहिब सय्यदना बिलाल फण्ड के लिए एक रोड़ रूपए की रकम दे कर गए हैं। इसी तरह कुरआन के प्रकाशन के लिए उन्होंने बहुत बड़ी रकमें दीं। जमाअत कराची के असंख्य प्रोजेक्ट थे उनके लिए चंदे दिए और उन्होंने हमेशा बड़ी सादगी से जीवन बिताया। उनके बाहरी रख-रखाव से लगता ही नहीं था कि यह व्यक्ति दो कारखानों का मालिक और बड़ा अमीर आदमी है क्योंकि जो कमाई होती थी अपने खर्च के लिए और घर के खर्च के लिए रख कर बाकी जमाअत को दे दिया करते थे और अंत में भी ये निर्देश हैं कि यह मेरी संपत्ति है यह जमाअत की होगी। अल्लाह तआला उन के स्तर बढ़ाए और उन के नवासे नवासी को और बच्चों को और बेटी को भी धैर्य प्रदान करे और उन के नेक नमूनों पर चलने की तौफीक प्रदान करे। नमाज़ों के बाद इन का नमाज़े जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा ।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़ुत्बः जुमअः

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा की कुरबानियों और उन के स्थान और सम्मान तथा उन पर अल्लाह तआला के इनामों का वर्णन।

ये सहाबा अपनी सारी नफसानी इच्छाओं से पवित्र थे, साफ दिल होकर अल्लाह तआला से विशेष होकर केवल और केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता चाहने के लिए अपनी ज़िन्दगियां गुज़ारने वाले थे और जब ये अवस्था हो तो अल्लाह तआला भी नवाज़ता है और बहुत अधिक नवाज़ता है और हम सहाबा की ज़िन्दगी में ये बातें देखते हैं।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा के अल्लाह तआला से सम्बन्ध और अल्लाह तआला की मुहब्बत में उस की प्रसन्नता के लिए महान कुरबानियों के ईमान वर्धक घटनाओं का वर्णन।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुव्वते कुदसिया ने इन सहाबा में इस प्रकार की रूह फूंक दी थी कि वे मरते हुए भी कहते थे कि काबा के रब्ब की कसम हम कामयाब हो गए हम ने ख़ुदा को पा लिया, ये लोग ज़ुल्म के विरुद्ध जंग करने वाले थे, ज़ुल्म फैलाने वाले नहीं थे।

किसी भी सहाबी की घटना को ले लें श्रद्धा और वफा और ख़ुदा तआला के लिए जान के नज़राने प्रस्तुत करने के लिए हमेशा तैय्यार रहते थे।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपने सहाबा से मुहब्बत का जो अंदाज़ था और फिर जिस तरह आप की कुव्वत कुदसिया से अल्लाह तआला से उन सहाबा का सम्बन्ध पैदा हो गया था और फिर ख़ुदा तआला भी कई बार इन सहाबा को सीधा नवाज़ता था या आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से नवाज़ता था, इस के वर्णन से भी सहाबा के स्थान और सम्मान का भी पता चलता है।

उन की अन्दर दुनिया की चाह ही समाप्त हो गई थी और वे ख़ुदा को देखने लग गए थे। वे बहुत अधिक तेज़ी से ख़ुदा तआला की राह में इस तरह से फिदा हो गए कि मानो प्रत्येक उन में से इब्राहीम था।

अल्लाह तआला हमें सहीह रंग में सहाबा के स्थान और सम्मान को पहचानने की तौफीक प्रदान फरमाए और उन के नेक नमूनों पर चलते हुए श्रद्धा और वफा को भी बढ़ाने की तौफीक प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 9 मार्च 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा के बलिदान और उनके स्थान और बार और अल्लाह उन पर पुरस्कार का जिक्र करते हुए फरमाते हैं कि:

"हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहो अन्हो ने अपना सारा धन दौलत अल्लाह तआला के रास्ते में दे दिया और आप कंबल पहन लिया था लेकिन अल्लाह तआला ने उस पर उन्हें क्या दिया। सारे अरब का उन्हें राजा बना दिया और उसी के हाथ से इस्लाम को नए सिरे से जीवित किया और मुर्तद अरब को फिर से जीत कर दिखा दिया और वह कुछ दिया जो किसी के भ्रम तथा गुमान में भी न था।" फरमाते हैं " अत: उनकी ईमानदारी और निष्ठा और वफादारी हर मुसलमान के लिए अपनाने योग्य है। सहाबा का जीवन एक ऐसा जीवन था कि सभी नबियों में से किसी नबी के जीवन में यह उदाहरण नहीं पाया जाता ... " फरमाते हैं कि " मूल बात यह है कि जब तक मनुष्य अपनी इच्छाओं और स्वार्थों से अलग होकर अल्लाह तआला के सम्मुख नहीं आता वह कुछ प्राप्त नहीं करता बल्कि ख़ुद अपना नुकसान करता है परन्तु जब वह सभी नफसानी इच्छाओं और स्वार्थों से अलग हो जाए और खाली हाथ और पवित्र दिल लेकर अल्लाह तआला के सम्मुख जाए तो भगवान उसे देता है और अल्लाह तआला उसकी सहायता करता है। लेकिन शर्त यही है कि मनुष्य मरने के लिए तैयार हो जावे और इसकी राह में अपमान और मौत को अलविदा कहने वाला बन जावे।" फरमाया "देखो दुनिया एक नश्वर चीज़ है। (कोई इसमें स्थायी नहीं रहता) "लेकिन उस का आन्नद भी उस को मिलता है जो उसे ख़ुदा तआला के लिए छोड़ते हैं। यही कारण है कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला अंतरंग होता है अल्लाह तआला दुनिया में उसके लिए स्वीकृति फैला देता है। यह वही स्वीकृति है जिसके लिए दुनियादार हज़ारों प्रयास करते हैं कि किसी तरह से कोई ख़िताब मिल जाए या किसी सम्मान की जगह या दरबार में कुर्सी मिले और कुर्सी में बैठने वालों में नाम लिखा जाए। अत: सभी सांसारिक इज़्ज़तें उसी को दी जाती हैं और हर दिल में ही महानता और स्वीकृति डाल दी जाती है जो अल्लाह तआला के लिए सब कुछ छोड़ने और खोने को तैयार हो जाते हैं। न केवल तत्पर बल्कि छोड़ने के लिए तैयार हैं ऐसा इसलिए है क्योंकि ख़ुदा तआला के लिए हर चीज़ को खोने वालों को सब कुछ दिया जाता है।"

आप मज्लिस में बैठे ये बातें वर्णन कर रहे थे। दूसरी जगह एक और रिवायत में ये शब्द भी मिलते हैं कि आपने फ़रमाया कि "ज़मीनी गावर्मेन्टों के लिए जो थोड़ा सा भी कुछ गंवाता है उन्हें इनाम मिलता है।" (आम दुनियादारी में देखो तुम कुछ देते हो, उनके लिए कुछ करते हो तो इनाम मिलता है।) फरमाया " तो जो ख़ुदा के लिए गंवाए तो उसे इनाम न मिलेगा? " फिर आप फरमाते हैं "और वह नहीं मरते जब तक कि वह इससे अधिक बहुत कुछ न पा लें जो उन्होंने ख़ुदा तआला की राह में दिया है। ख़ुदा तआला किसी का कर्ज़ अपने ज़िम्मा नहीं रखता है पर अफसोस यह है कि इन बातों को मानने वाले हैं और उनकी वास्तविकता की ज्ञान रखने वाले बहुत ही कम लोग हैं।"

(मल्फूज़ात भाग 5, पृष्ठ 398-39 9, हाशिया के साथ प्रकाशन 1985 ई यूके)

यह ईमानदारी और निष्ठा और ईमानदारी दिखाने वालों के नमूने हमें इस शान से देखाई देते हैं कि व्यक्ति हैरान रह जाता है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम कू कुव्वते कुदसिया ने न केवल उसकी मुहब्बत के मुंह बदल दिए पहले मुहब्बतों के मुंह किसी और तरफ थे। दुनिया से ख़ुदा तआला की तरफ कर दिए। बल्कि उन मोहब्बतों के मानदंडों को वह ऊंचाई प्रदान की जिसकी मिसाल दुनिया में नहीं मिलती थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किस खूबसूरती से इस ऊंचाई और बुलंदी का उदाहरण दिया है कि फरमाया कि उनके इस उन की मुहब्बत की गुणवत्ता और कुर्बानी का उदाहरण पिछले नबियों के जीवन में भी नहीं पाया जाता। और जहां तक नबियों के मानने वालों का सवाल है तो उनकी शान क्या, उनकी हालत तो सहाबा की तुलना में बहुत ही गिरी हुई थी। ये सहाबा अपनी सभी निजी इच्छाओं से शुद्ध थे साफ दिल होकर और अल्लाह तआला के लिए शुद्ध होकर केवल अल्लाह तआला की ख़ुशी चाहने के लिए अपना जीवन बिताने वाले थे और जब यह स्थिति हो तो अल्लाह तआला भी नवाज़ता है और बेहद सम्मानित करता है और हम सहाबा के जीवन में ये बातें देखते हैं।

कुछ सहाबा की घटनाओं को वर्णन करता हूं कि कैसे उन्होंने अपने नफ्सों को ख़ुदा तआला के अधीन कर दिया था। क्या नमूने उन्होंने दिखाए।

हज़रत अब्बाद बिन बश्र एक अंसारी सहाबी थे। ठीक जवानी में लगभग पैंतालीस साल की उम्र में उन्हें शहादत नसीब हुई थी। (असदुल ग़ाब्बह फी मअरफुतल सहाबा जिल्द 3 पृष्ठ 46 आबाद बिन बशर दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई), (अल्असाबा फी तमीज़िस्सहाबा जिल्द 3, सफ़ा 496 अबाद बिन बश्र मुद्रित दारुल कुतुब अलइलमिया बैरूत 2005 ई) उनकी इबादत और कुरआन की तिलावत की एक घटना बताते हुए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा फरमाती हैं कि एक रात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तहज्जुद के समय जागे तो मस्जिद से कुरआन की तिलावत की आवाज़ आ रही थी और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तहज्जुद के लिए बहुत शीघ्र जागते थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया,"क्या यह अब्बाद की आवाज़ है?" हज़रत आयशा निवदेन करती हैं कि मैं ने कहा कि इन्हीं की आवाज़ लगती है। इस पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें दुआ दी दिया कि हे अल्लाह अब्बाद पर दया कर।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल शहादत ... हदीस 2655)

कितने ख़ुशनसीब थे जो कुराआन की तिलावत में अपनी रातें गुज़ार कर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआओं को सीधे प्राप्त करने वाले बने। और रातों को उठ कर अल्लाह तआला को राज़ी करने के लिए उस की रहमतों को प्राप्त करने के लिए पुकारते थे।

हज़रत अब्बाद को अपने एक सपने के कारण विश्वास था कि उन्हें शहादत की स्थिति प्राप्त करेगा। हज़रत अबी सईद ख़ुदरी फरमाते हैं कि हज़रत अब्बाद ने एक बार मुझसे कहा कि मैं सपने में देखा है कि आसमान फटा है और इसमें प्रवेश कर गया हूँ तो वह जुड़ गया है। वापस अपनी अवस्था में लोट आया है इस सपने से वह कहते हैं कि मुझे विश्वास हो गया कि अल्लाह तआला मुझे शहीद का दर्जा देगा। उनकी यह ख़बाव जंगे यमामा में पूरी हुई और बड़ी बहादुरी से लड़ते हुए। लेकिन जिस दुश्मन से लड़ रहे थे उस पर अपने दस्ते ने जिस में सभी अंसार शामिल थे जीत पाई। आप तो शहीद गो गए लेकिन दुश्मन पर जीत पाई। हज़रत अबी सईद फरमाते हैं कि युद्ध के बाद उनका चेहरा तलवार के घाव की वजह से पहचाना नहीं जाता था। उनकी लाश की पहचान उनके शरीर के एक निशान के कारण हुई थी।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न् साद अनुवादक जिल्द 4 पृष्ठ 31 मुद्रित नफीस अकादमी कराची)

फिर इतिहास हमें एक अन्य सहाबी के बारे में बताता है जिनका नाम हराम बन मलपान था। यह नौजवान किशोरों और दूसरों को कुराआन सिखाने और ग़रीबों और सुफ्फा वालों की सेवा में हमेशा आगे रहता थे। जब बनी आमिर के एक प्रतिनिधिमंडल ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अनुरोध किया कि हमें प्रचार के लिए कुछ लोग भेजें ताकि हमें भी इस्लाम का पता चले और हमारे लोग इस्लाम में प्रवेश करें। इरादा उस समय भी उन का ख़राब था, लेकिन उन्होंने यह अनुरोध किया। ये लोग विश्वसनीय नहीं थे इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मुझे तुम लोगों से खतरा है कि जिसे मैं भेजूँगा उसे शायद तुम्हारे लोग नुकसान पहुंचाऐं तो उनके सरदार ने कहा। वह अभी तक एक मुस्लिम नहीं हुआ लेकिन कहने लगा कि मैं ज़िम्मेदारी लेता हूं। मैं जिम्मेदार रहूंगा और सारे मेरी शरण में होंगे। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर एक प्रतिनिधिमंडल बनी आमिर की तरफ भेजा। हराम बिन मुलहान को अमीर निर्धारित किया। जब यह प्रतिनिधिमंडल वहां पहुंचा तो हज़रत हराम बिन मलहान को शक हुआ कि ज़रूर कोई गड़बड़ है। उन के आचरण कुछ अच्छे नहीं लग रहे थे। दूर से पता लग गया कि जब उनका इरादा अच्छा नहीं था। इसलिए उन्होंने अपने सहयोगियों से कहा कि एहतियाती उपाय करना चाहिए और सबको वहाँ इकट्ठे नहीं जाना चाहिए क्योंकि अगर उन्होंने घेर लिया तो सब को एक ही समय में नुकसान पहुंचा सकते हैं। इसलिए आप सब यहीं रहो और मैं और एक और साथी जाते हैं। यदि उन्होंने हमसे सही व्यवहार किया तो तुम लोग भी आ जाना और यदि हमें नुकसान पहुंचाया तो तुम लोग परिस्थितियों के अनुसार तय करना कि क्या करना है। वापस लौटाना है या उन से लड़ना है या वहां रहने है। जब यह हराम बन मलहान और उनके साथी उन लोगों के पास गए तो बनी आमिर के सरदार ने एक आदमी को इशारा किया और उसने पीछे से हराम बिन मलहान पर भाले से हमला किया। उसकी गर्दन से ख़ून का फव्वारा निकला। उन्होंने उस रक्त को अपने हाथों में लिया और कहा कि काबा के रब्ब की कसम! मैं सफल हो गया। काबा के रब्ब की तरफ मैं सफल हो गया और बाद में फिर उनके दूसरे साथी को भी शहीद कर दिया गया और फिर नियमित हमला करके बाकी जो सत्तर लोग थे, उन सब को शहीद कर दिया सिवाय एक या दो जो बचे। जब उन लोगों को क्रूर रूप में धोखे से शहीद किया जा रहा था तो उन्होंने यह दुआ की कि हे अल्लाह एक तो हमारी यह कुरबानियां स्वीकार कर ले और हमारी इस अवस्था की ख़बर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कर दे क्योंकि यहां तो सूचना पहुंचाने कोई माध्यम नहीं है इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत जिब्राईल ने उन सहाबा का सलाम पहुंचाया और वहां के हालात और शहादत की सूचना दी। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को सूचना दी कि वे सभी शहीद कर दिए गए हैं। सत्तर सहाबा थे जैसा कि मैंने कहा और उन सब की शहादत का आप को बड़ा सदमा था। आप तीस दिन तक उन कबीलों के ख़िलाफ दुआ की कि हे अल्लाह उनमें से जिन्होंने यह ज़ुल्म किया है ख़ुद उनकी पकड़ कर। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन शहादतों को बड़ी महान शहादत करार दिया है।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी हदीस 4091) (सही मुस्लिम किताबुल इमारत हदीस 4917) (तारीख अल-ख़मीस जिल्द1 पृष्ठ 452 मुद्रित मौसिसा शाबान बैरूत) (अहमद बिन हंबल जिल्द 4 पृष्ठ 355 हदीस 12429 मसनद अनस बिन मालिक प्रकाशित आलेमुल कुतब बैरूत 1998 ई)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस प्रेम और मुहब्बत और धर्म के लिए भव्य कुर्बानी का ज़िक्र करते हुए एक अवसर पर फरमाते हैं कि

"प्रेम एक ऐसी चीज़ है कि वह सब कुछ करा देती है एक व्यक्ति किसी पर आशिक होता है तो माशूक के लिए क्या कुछ नहीं कर गुज़रता" फिर दुनिया वालों की एक उदाहरण दी आपने कि "एक महिला किसी पर आशिक थी। उसे खींच ख़ींच कर लाते थे और विभिन्न प्रकार की तकलीफें देते थे। वह मारें खाती थी लेकिन वह कहती थी कि मुझे आनन्द मिलता है। जबकि झूठी मोहब्बतों, फिस्क़ और फजूर के रंग में प्रकट होने वाले प्रेम में दुख और कठिनाइयों को सहने में एक आन्नद मिलता है।" आप फरमाते हैं (दुनिया वालों का यह हाल है) "तो विचार करो कि वह जो ख़ुदा तआला की सच्चा आशिक हो, उसके इलाही आस्ताने पर कुरबान होने का इच्छुक हो वह दु:ख और कठिनाइयों में कितना सुख पा सकता है।" आप फरमाते हैं कि "सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की अवस्था देखो मक्का में उनको क्या-क्या कष्ट पहुंचे? कई उनमें से पकड़े गए थे विभिन्न प्रकार की तकलीफों और सज़ाओं में गिरफ्तार हुए। पुरुष तो पुरुष कुछ मुस्लिम महिलाओं पर इस कदर सख़्तियां की गईं कि उनके विचार से शरीर कांप उठता है। अगर वह मक्का वालों से मिल जाते तो उस समय ज़ाहिर है वह उनकी बड़ी इज़्ज़त करते क्योंकि वे उन की बिरादरी ही तो थे। लेकिन वह क्या बात थी जिसने उन्हें दु:ख और कठिनाइयों के तूफान में भी सच्चाई पर स्थापित रखा। वह वही आन्नद और सरूर का स्रोत था जो सच्चाई से प्यार की वजह से उनके सीनों से फूट निकलता था।"

फिर आप इस घटना का उदाहरण देते हुए कहते हैं। " एक सहाबी के बारे में लिखा है कि जब उसके हाथ काटे गए तो उसने कहा कि मैं वुज़ू करता हूं। आख़िर लिखा है कि सिर काटा तो(फिर कहा कि)"सिज्दा करता है। कहता हुआ मर गया। उस समय उस ने दुआ की कि हे अल्लाह तआला आँ हज़रत

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर पहुंचा दे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस समय मदीना (में) थे। जिब्राईल अलैहिस्सालम ने जाकर अस्सलामो अलैकुम कहा। आप ने वअलैकुम सलाम कहा और इस घटना की सूचना दी। अत: इस आन्नद के बाद जो ख़ुदा तआला में मिलती है एक कीड़े की तरह कुचल कर मर जाना स्वीकृत होता है।" (जिस तरह उन सहाबी ने कहा था मैंने काबा के रब्ब को पा लिया जो प्रेम की चरम सीमा थी वहाँ में पहुँच गया।) फरमाते हैं कि "और मोमिन को बड़ी से तकलीफें भी आसान होती हैं। सच पूछो तो मोमिन को निशानी ही यही होती है कि वह कत्ल होने के लिए तैय्यार रहता है। इसी तरह अगर किसी आदमी को कहा जाए कि या यहूदी हो जा या कत्ल हो जा। उस समय देखना चाहिए कि उस के नफ्स की क्या आवाज़ होती है? क्या वह मरने के लिए सिर रख देता है या यहूदी होने को प्राथमिकता देता है अगर वह मर जाने को प्राथमिकता देता है तो वास्तविक मोमिन है। अत: इन मुसीबतों में जो मोमिनों पर आते हैं अन्दर ही अन्दर एक आन्नद आता है। भला सोचो तो सही कि अगर यह आन्नद न होता तो अल्लाह के नबी इन मुसीबतों को एक लम्बा सिलसिला कि प्रकार गुज़ारते।

(उद्धरित मलफूज़ात जिल्द 2 पृष्ठ 308-309, संस्करण 1985 मुद्रित यु.के)

यहाँ तो सहाबा के जो उदाहरण हैं उनमें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुव्वते कुद्सी ने एक ऐसी रूह फूंक दी थी कि जाते हुए भी यह कहते थे, मरते हुए यह कहते थे जैसा कि हमने सुना कि काबा के रब्ब की कसम हम सफल हो गए। हमने ख़ुदा को पाया लेकिन ये वे लोग थे जो नेकियां करने वाले थे जिन पर जब अत्याचार किए जाते थे तो इस अत्याचार के लिए बलिदान देते थे न कि ख़ुद तानाशाह बनकर अत्याचार करते जिस तरह कि आजकल कुछ समूहों ने काम करना शुरू किया है और फिर कहते हैं कि हम शहीद हो गए या शहीद हो जाएंगे तो जन्नत में चले जाएंगे। ये वे लोगों नहीं थे। ये लोग अत्याचार के ख़िलाफ लड़ने के लिए जा रहे थे। ज़ुल्म फैलाने वाले नहीं थे।

फिर हज़रत अब्दुल्ला बिन अमरो एक अंसारी सहाबी थे जिनके बारे में ऐसा बयान हुआ है कि उहद के युद्ध में जाते हुए उन्होंने अपने बेटे को कहा कि सब से पहले मुझे शहादत प्राप्त होगी। शायद उन्होंने सपना देखा था या अल्लाह तआला ने उन्हें बताया था। उन्होंने कहा कि मेरी मृत्यु के बाद तुम अपनी बहनों का ख्याल रखना चाहिए। उन की बेटियां थीं। और एक यहूदी से मैंने ऋण लिया हुआ है वे ऋण मेरे खजूर के बाग़ों से अदा कर देना जब उसकी आय होगी।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल जनायज़ हदीस 1351, किताबुल मनाकिब हदीस 3580) (उमदतुल क़ारी शरह सहीह बुख़ारी जिल्द 8 पृष्ठ 244 हदीस 1351 किताबुल जनायज़ मुद्रित दारुल अहया अल-अरबी बैरूत 2003 ई)

यह था अल्लाह तआला से प्यार और तक्वा, पवित्रता और अधिकार के अदा करने का स्तर। युद्ध के लिए जा रहे हैं। जान की कोई परवाह नहीं। बल्कि इस बात के लिए बल्कि इस बात की खुशी है कि मैं शहीद होने वालों में पहले शहीद का सौभाग्य पाने वाला हूँ या पाऊंगा। यह भय नहीं है कि मेरी युवा बेटियां भी हैं उन के अधिकार अदा करने हैं। उन अधिकारों को अदा करे के लिए एक तो अल्लाह तआला पर भरोसा है। फिर बेटे को समझाया कि अब तुम ने घर का बड़ा बनकर अपने कर्तव्यों को पूरा करना है और बहनों का ख्याल रखना है। और फिर ऋण के अदा करने की भी चिंता है कि यहूदी से कर्ज़ लिया हुआ है उसका सामान भी मैं तुम्हें नहीं कहता कि तुम अपनी ज़ात से करो बल्कि इंशा अल्लाह बाग़ों की आय से अदा हो जाएगा। तुम्हारे पर बोझ नहीं डाल रहा, हां एक कर्तव्य से तुम्हें आश्वासन देता हूं एक इस्लामी आदेश से तुम्हें आगाह कर रहा हूँ कि कर्ज का अदा करना ज़रूरी है और ऋण उतारकर फिर ही तुम मेरी संपत्ति के वारिस बन सकते हो। पहली बात और पहला ऑर्डर ही यही है कि कर्ज़ उतारो।

हज़रत अब्दुल्लाह की शहादत और बलिदान को कैसे अल्लाह तआला ने नवाज़ा। इसका उल्लेख यूं मिलता है कि हज़रत अब्दुल्लाह के बेटे को उदास देखकर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने संवेदना फरमाने के बाद कहा कि मैं तुम्हें एक ख़ुश करने वाली बात बताता हूँ। फरमाया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे पिता को शहादत के बाद अपने सामने बिठाया और फरमाया कि मुझसे जो चाहो इच्छा करो मैं तुम्हें दूंगा। हज़रत अब्दुल्लाह ने अपने रब्ब से निवेदन किया हे मेरे ख़ुदा! मैंने बन्दगी का हक तो अदा नहीं किया तेरे सामने इच्चा किस मुंह से करूं। हालांकि आप की इबादतों की गुणवत्ता थे, कुरबानियों की गुणवत्ता थी। लेकिन फिर भी यह कह रहे हैं कि मैंने तेरा बंदगी का हक तो अदा नहीं किया। और फिर आपसे किस मुंह से अपनी इच्छा व्यक्त करनी चाहिए? तेरी दया और फज़ल है तो प्रदान कर दे। फिर निवेदन किया कि मेरी इच्छा अगर पूछता है मेरे अल्लाह! तो यही इच्छा है कि मुझे तो दुनिया में लौटा दे ताकि मैं फिर तेरे नबी के साथ होकर दुश्मन का मुकाबली करूं और फिर शहीद होकर आऊँ। अल्लाह तआला ने फरमाया कि मैं यह निर्णय कर चुका हूँ जिस को एक बार मौत दे दूं वह फिर दुनिया में लौटाया नहीं जाता।

(मजमअ अज़्ज़वाइद जिल्द 9 पृष्ठ 389 हदीस 15756 किताबुल मनाकिब बाब फी अब्दुल्लाह बिन अमरो मुद्रित दारुल कुतुब इलमिया बैरूत 2001 ई)

इसलिए, यह इच्छा तो पूरी नहीं हो सकती। बाकी इंशा अल्लाह, अल्लाह चाहता है कि शहीद का सम्मान है वह तो मिलना ही है।

इसी तरह एक और सहाबी हज़रत अम्रो बिन जमोह के बारे में उनकी कुरबानी की भावना और शहादत का उल्लेख मिलता है कि वह अपने पैर के कष्ट के कारण लंगड़ा कर चलते थे। बहुत तकलीफ थी। इसलिए बद्र की लड़ाई में उनके बेटों ने उनके विकलांग होने के कारण उन्हें शामिल नहीं होने दिया। जब उहद का अवसर आया और काफिर लोग मुसलमानों पर हमला करने के लिए इकट्ठे हुए तो उन्होंने अपने बेटों से कहा कि अब तुम जो चाहो कर लो मैंने अब तुम्हारी बात नहीं माननी और इसमें ज़रूर शामिल होना है। इसलिए वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मेरे बेटे मेरे पैर की तकलीफ के कारण युद्ध में मुझे शामिल होने से रोक रहे हैं। लेकिन मैं आपके साथ इस जिहाद में शामिल होना चाहता हूं। और कहा कि अल्लाह की कसम, मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला मेरी हार्दिक इच्छा पूरी करेगा और मुझे शहादत प्रदान करेगा। और मैं अपने लंगड़े पैर के साथ जन्नत में प्रवेश करूंगा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि विकलांगता के कारण तुम पर जिहाद अनिवार्य नहीं है। लेकिन अगर तुम्हारी यही इच्छा है और तुम यही चाहते हो तो फिर शामिल हो जाओ और बेटों को भी बताया कि उन्हें शामिल होने दें तो हजरत अम्रो युद्ध में शामिल हो गया और यह दुआ करते थे कि हे अल्लाह! मुझे शहादत प्रदान करे और मुझे अपने घर की तरफ न लौटाना और फिर वास्तव में उनकी यह इच्छा पूरी पूरी हो गई और वे उहद के मैदान में शहीद हो गए।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 7 पृष्ठ 688-689 अनुवादक, अम्रो बिन अल-जमोह मुद्रित अल-मीज़ान प्रकाशक लाहौर)

तो यह लोग ईमान में बढ़े हुए थे। यकीन में बढ़े हुए थे किसी भी सहाबी की घटना को ले लो। वे ईमानदारी और वफादारी और ख़ुदा तआला के लिए जान के नज़राने प्रस्तुत करने के लिए तैयार प्रत्येक समय तैयार थे।

हज़रत अबू तलहा एक अंसारी सहाबी थी जो तीर चलानें में प्रसिद्ध थे। उहद के युद्ध में तीरंदाजी करते हुए उन्होंने बड़े जौहर दिखाए। (सही अल-बुखारी किताबुल मनाकिब हदीस 3811)

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी हदीस 4064)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते थे कि अबू तलहा के आगे तीर डाल दो। क्योंकि वे बहुत तेज़ी से तीरों का इस्तेमाल करते थे और उनके तीर बहुत निशानों पर लगते थे। उन को भी उहद के युद्ध में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने ढाल बन कर खड़े होने की तौफीक मिली थे। यह अंसारी था। हज़रत तलहा ने तो अपना हाथ आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे के सामने किया हुआ था। और अबू तलहा को भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने खड़े होकर साहस और बहादुरी के जौहर दिखाने का मौका मिला।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मनाकिब हदीस 3811)

भय से मुक्त होकर और युद्ध के दौरान ख़तरनाक स्थानों पर खड़ा होने को पसंद करते थे। इसलिए दुश्मन जो इस्लाम को समाप्त करना चाहता है इस के साथ लड़े। इसलिए कि दुनिया में शांति और सुरक्षा स्थापित कर सकूं जैसा कि मैंने कहा था, इन लोगों ने ज़ुल्म करने के लिए युद्ध नहीं लड़े थे बल्कि दुश्मन ने जब पर हमला किया तो फिर कायरता नहीं दिखाई बल्कि, साहस और बहादुरी के जौहर दिखाए और अपनी सारी क्षमताओं का उपयोग अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करने के लिए प्रयोग किया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

"(ख़ुदा तआला) की तरफ से जो ज्ञात होता है वह हो कर ही रहता है। माध्यम क्या चीज़ हैं? कुछ भी नहीं। अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरी राह में जाओगे

तो مُرَاغَمًا كَثِيرًا (अन्निसा 101) पाओगे। नीयत को ठीक कर के जो कदम उठाता है ख़ुदा उस के साथ होता है बल्कि इंसान अगर बीमार हो तो उस की बामीरी दूर हो जाती है।" फरमाया कि "सहाबा के उदाहरण देख लो। वास्तव में सहाबा कराम के नमूने इस प्रकार हैं कि सारे नबियों के उदाहरण हैं। ख़ुदा को तो कर्म ही पसन्द हैं। उन्होंने बकरियों की तरह अपनी जानें दीं और उन का उदाहरण इस प्रकार है कि जिस नबुव्वत का एक घर आदम अलैहिस्सलाम के समय से चला आ रहा है(नबुव्वत की एक शक्ल है, एक सम्मान है जिस को ज़हरी रूप में वर्णन किया गया है। हमारे मज़हब की तारीख़ हमें आदम अलैहिस्सलाम के समय से चलती हुई नज़र आती है।) फरमाते हैं " परन्तु साहाबा कराम ने चमका कर दिखला दी।(केवल इस की ज्ञान की अवस्था नहीं बताई बल्कि कर्म से चमका कर दिखा दिया।)" और बतलाया कि सच्चाई और वफादारी इस को कहते हैं।" आप फरमातें हैं कि" हज़रत ईसा की तो हालत ही न पूछू। मूसा (अलैहिस्सलाम) को किस ने न बेचा। परन्तु ईसा अलैहिस्सालम को उन के हवारियों ने तीस रूपए ले कर बेच दिया। कुरआन शरीफ से प्रमाणित होता है कि हवारियों को हज़रत ईसा अलैहिस्सालम की सच्चाई पर शंका थी तभी तो माइदा मांगा और कहा وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا ت ताकि तेरा सच्चा और झूठा होना प्रमाणित हो जाए। इस से ज्ञात होता है कि माइदा के नाज़िल होने से पहले उन की अवस्था नअलमो की न थी। फिर जैसे असुविधा की जिन्दगी उन्होंने(अर्थात सहाबा ने) व्यतीत की उस का उदाहरण कहीं नहीं पाया जाता।" फरमाया " सहाबा किराम की गिरोह अदभुत गिरोह सम्मान योग्य और अनुकरण के योग्य था। उन के दिल यकीन से भर गए थे। जब यकीन होता है तो प्रथम प्रथम माल आदि देने को दिल चाहता है। फिर जब बढ़ जाता है तो यकीन वाले ख़ुदा के लिए जान देने को तय्यार हो जाता है।

(मलफूज़ात भाग 5 पृष्ठ 42 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

यह विश्वास भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुव्वते कुदसिया के कारण से हर समय बढ़ता ही चला जा रहा था। इन सहाबा के दैनिक रोज़ के हालात भी इश्के रसूल के अजीब नज़ारे दिखाई देते हैं। इन की कोशिश होती थी कि किसी प्रकार कोई अवसर मिले और हम अपनी मुहब्बत को प्रकट करें।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के बारे में आता है कि वह हर समय इस चिन्ता में रहते थे कि किस प्रकार साधारण हालात में भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत को प्रकट करें। रिवायत में आता है कि एक बार अपने बेटे जाबिर के हाथ घर में पकी हुई कोई मीठी चीज़ आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में भिजवाई। जब वह वापस आए तो बेटे से पूछी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कूछ फरमाया था उन्होंने कहा कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि जाबिर गोश्त लाए हो। इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने फमराया मेरे आक़ा को गोश्त की इच्छा है। उसी समय घर की एक बकरी ज़िब्ह की और गोश्त भून कर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में भिजवाया। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन के ख़ानदान को भी दुआ से नवाज़ा।

(अलजामे लेशुअब अल-ईमान जिल्द 8 पृष्ठ 62-63 हदीस 5503 प्रकाश मक्तबतुर्शुद नाशिरून रियाज़ 2003 ई)

सहाबा को शुरू में अपने निकटवर्ती रिश्तेदारों में तब्लीग़ करने में बहुत परेशानी होती थी। कहीं बेटा मुसलमान हुआ और बाप नहीं तो कठिनाइयां हैं। कहीं और कोई कमज़ोर रिश्तेदार मर्द या औरत मुसलमान हुई तो दूसरे बड़े रिश्तेदार तंग कर रहे हैं। या वह नापसन्दीदगी को प्रकट करते हैं। हज़रत अमरो बिन जमरोह से पहले इन के बेटे बैअत कर ली थी। बाप मुश्रिक था। बाप को तब्लीग़ करने के लिए जब कोई रास्ता नहीं देखा, वह मानते नहीं थे तो बेटे ने यह रास्ता निकाला कि अपने बाप का वह बुत जो घर में सजा कर रखा गया था उसे रात को उठा कर कूड़े के गढ़े में फैंक दिया। अमरो बिन जमरोह दोबारा तलाश करे के अपने घर में ले आए और बड़े ग़ुस्सा से कहा कि अगर मुझे पता चल जाऐ कि किसने मेरी मूर्ति के साथ यह व्यवहार किया है तो उसे बड़ा दण्ड दूं। अगले दिन फिर पुत्र ने अपने पिता के बुत के साथ वही व्यवहार किया और किसी गड्ढे में पड़ी हुई मूर्ति मिलती है। अन्त में एक उमरो ने उस मूर्ति को बहुत साफ किया और सजाया और साथ अपनी तलवार रख दी और उस बुत को कहा कि मुझे नहीं पता लगता कि कौन तुम्हारे साथ यह हरकतें कर रहा है। परन्तु अब मैं यह तलवार भी तुम्हारे साथ रख रहा हूं अब अपनी सुरक्षा तुम ख़ुद कर लेना। अगले दिन जब देखा तो बुत फिर ग़ायब हो गई। तलाश करने पर एक गंद के ढेर पर एक मुर्दा कुत्ते के गले में बंधा हुआ मिला। उमरो यह देख के सोत में पड़ गए कि वह बुत जिसे मैंने ख़ुदा बना रखा है इस में तो इतनी हिम्मत भी नहीं कि तलवार पास होने के बावजूद अपनी रक्षा कर सके तो उसने मेरी सुरक्षा क्या करनी है। इसलिए उन्होंने मूर्ति को संबोधित किया और कहा, "यदि तुम सच्चे ईश्वर होते तो इस प्रकार कुत्ते की गले में पड़े हुए न होते। अत: मैं अल्लाह की प्रशंसा करता हूं, जो रिज़क प्रदान करने वाला इंसाफ करने वाला है। यह अंसार सब से अन्त में इस्लाम स्वीकार करने वाले अम्रो बनि जमोह ही थे।

(असद अल-गबाह भाग 7 पृष्ठ 688 अनुवादक, प्रकाशक अल्मीज़ान कुतुब लाहौर)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपने सहाबा से मुहब्बत का जो अंदाज़ा था और फिर जिस प्रकार आप की कुव्वते कुदसिया से अल्लाह तआला से इन सहाबा को सम्बन्ध हुआ और फिर ख़ुदा तआला भी इन सहाबा को कई बार नवाज़ता था या आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि के माध्यम से नवाज़ता था। इस का वर्णन भी सहाबा के सम्मान का पता देता था।

हज़रत अबी बनि कअब का अपने सहाबा को भी एक विशेष स्थान है। बुख़ारी में भी यह रिवायत आती है कि एक बार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि ने उन से कहा कि अल्लाह तआला ने मुझे अल्लाह तआला ने कहा कि मैं तुम्हें कुरआन पढ़ कर सुनाओं। हज़रत अबी बिन कअब हैरानी से पूछने लगे कि क्या अल्लाह तआला ने मेरा नाम लेकर फरमाया है। उस ख़ुदा ने जो सारे जहान का मालिक है मेरा नाम लेकर फरमाया है कि मुझे कुरआन सुनाओ। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हां तुम्हारा नाम लेकर फरमाया है इस पर उबी बिन कअब भावना से रोने लगे। बहुरहाल आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ك की सूरत पढ़ कर सुनाई। अर्थात सूरत बय्यनह: (सहीह बुख़ारी किताबुल तफसीर हदीस 4960-4961) जब किसी ने बाद में एक बाद हज़रत उबी बिन कअब से पूछा कि आप तो इस बात को सुन कर बहुत ख़ुश हुए होंगे। तो उन्होंने जवाब दिया कि जब अल्लाह तआला ने कहा कि अल्लाह तआला के फज़लो और रहमतों को देख कर और याद कर के ख़ुश हुआ करो तो मैं ख़ुश क्यों न होता।(असदुल ग़ाबा अनुवाद जिल्द 1 पृष्ठ 111 अबी बिन कअब प्रकाशन अल्मीज़ान नाशिर लाहौर) हज़रत अबी बिन कअब कुरआन का बहुत गहरा ज्ञान रखते थे। एक बार आं सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन से पूछा(यह दो तीन सप्ताह पहले भी में वर्णन कर चुका हूं।) कुरआन करीम की कौन सी आयत हैं जिस को सब से महान कहा जाए? तो उन्होंने सब पहले तो यही कहा कि अल्लाह और उस का रसूल बेहतर जानते हैं फिर आर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आग्रह पर कहा कि आयतल कुर्सी एसी आयत है जिसे सब से महान कहना चाहिए। आयतल कुर्सी के हवाले से मैंने यह रिवायत भी वर्णन की थी। इस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन पर बहुत प्रसन्नता को प्रकट किया और फरमाया है उबई अल्लाह तआला तेरा ज्ञान मुबारक करे। वास्तव में आयतल कुर्सी ही कुरआन की महान आयत है।

(सुनन अबू दाऊद किताबुल वितर हदीस 1460)

एक रिवायत में है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी मृत्यु के वर्ष उनके साथ सारे कुरआन का दौर किया। (कनज़ुल उम्मान जिल्द 13 पृष्ठ 266 हदीस 36779 मुद्रित मउसस अर्रसाला बैरूत 1985 ई)

हज़रत उमर की अनुमति से आप लोगों को कुरआन का ज्ञान सिखाया करते थे। तफसीर बताया करते थे। (सही अल-बुख़ारी हदीस 2010) तो ये थे वे सहाबा जो तरक्की करते-करते अपने चरम स्थान को पहुंचे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "चूंकि विकास क्रम से होता है इसलिए सहाबी की तरक्कियां भी क्रम से हुई थीं।" फरमाते हैं कि "आप

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 19 April 2018 Issue No. 16

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 9 /- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

सहाबा को देखकर (अर्थात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा को देखकर) पूरी तरक्कियों पर पहुंचें। लेकिन यह उन्नति एक समय पर निर्धारित थी।" (अर्थात क्रम से होती है।)"अंत में सहाबा ने वह पाया जो दुनिया ने कभी नहीं पाया था और वह देखा जो किसी ने नहीं देखा था।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 2 पृष्ठ 52, संस्करण 1985 ई यू.के)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अवसर पर सहाबा के बारे में फरमाते हैं कि "सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम के जमाना को अगर देखा जाए तो पता चलता है कि वे लोग बड़े सीधे सादे थे जैसे कि एक बर्तन को कलई करवा कर साफ सुथरा हो जाता है इसी प्रकार उन लोगों के दिल थे जो अल्लाह तआला के कलाम से प्रकाशित और नफस की गन्दगियों के ज़ंग से बिल्कुल साफ थे। मानो قَدْاَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا के सच्चे मिसदाक़े थे।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 15, संस्करण 1985 ई यु.के)

फिर आप फरमाते हैं कि "सहाबा ने इस कदर सिदक दिखाया और उन्होंने न केवल बुत-परस्ती और सृष्टि पूजा से ही मुंह मोड़ा।" (न केवल मूर्तिपूजा से सृष्टि पूजा से अर्थात लोगों को पूजने से और लोगों की चापलूसी करना यह भी पूजा करना ही होता है।) "बल्कि वास्तव में, उनके अन्दर दुनिया की इच्छा ही समाप्त हो गई थी और वे ख़ुदा को देखने लगे थे। वह बहुत शीघ्रता से ख़ुदा तआला के मार्ग में फिदा थे मानो प्रत्येक उन में से इब्राहीम था।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 137, संस्करण 1985 ई यु.के)

फिर फरमाया कि " आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक शरीर की तरह हैं और सहाबा कराम आप के अंग हैं।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 279, संस्करण 1985 ई यु. के)

अल्लाह तआला हमें सही रंग में सहाबा के स्थान को पहचानने और उनके नमूनों पर चलते हुए अपनी श्रद्धा और वफा को बढ़ाने की तौफीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 2 का शेष

* एक मेहमान Barrie M Schwortz बैरी श्वार्टज़ ने कहा कि आप लोगों का जलसा बहुत प्यार लगता है यहां मुझे उस से कहीं अधिक मुहब्बत मिलती है जो मुझे अपने परिवार में नहीं मिलती।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "जो कोई भी एक बार हमारा दोस्त बन जाए, वह हमेशा हमारा दोस्त है और हम दोस्ती का हक अदा करते हैं।"

महोदय पिछले तीन सालों से इस प्रदर्शनी के संबंध में यू.के जलसा में शामिल होने के लिए आ रह हैं। उन्होंने कहा कि: मैं आपको दिखाना चाहता हूं कि मैंने ड्यूटी के बेज लगाया हुआ है। पिछले साल, मैंने कहा था कि मैं मेहमान नहीं हूं बल्कि एक मेज़बान हूं और मैं इस प्रदर्शनी की प्रशासन में शामिल हूं, इसलिए मुझे कर्तव्य बीज चाहिए। यही कारण है कि मैंने कर्तव्य की कर्तव्य को स्थापित किया है (Mu'minif एक बैज बीज लगाया गया है)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "यदि आप अगले साल आते हैं, तो आपको सहायक नहीं होना चाहिए, बल्कि एक नीले रंग का बेज होना चाहिए।

इस पर मेहमान ने कहा: इसका मतलब यह है कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने मुझे अगले साल भी जलसा सालाना में शामिल होने की दावत दे दी है।

महोदय ने कहा: जलसा सालाना में आए हुए तीन साल हो गए हैं । यह मेरे लिए यह बहुत आश्चर्य की बात है कि मैंने कभी भी कोई बुरी घटना नहीं देखी है। हर साल मैं अपने लैपटॉप बैग को अनन्य बाज़ार में छोड़ देता हूं, लेकिन मेरा बैग मेरी जगह से इधर उधर नहीं हुआ।

मैंने यहां जलसा में कई बार इस बात को प्रकट किया है कि मुझे अपने रिश्तेदारों से ज्यादा अहमदियों से प्यार मिलता है। मैं हुज़ूर अनवर को एक महान व्यक्ति समझता हूं जिनकी बुद्धिमत्ता बहुत व्यापक है और उनके साथ कुछ क्षण व्यतीत करने के बाद मैं समझ सकता हूँ कि अहमदी क्यों अपने ख़लीफा से इतना प्यार करते हैं।

* एक मेहमान ने कहा कि मैं ख़ुद को अहमदिया समुदाय के यहूदी सदस्य के रूप में सोचता हूं।

* इस वर्ष,कफने मसीह के कुछ नए विशेषज्ञ भी आए थे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने उन्हें सम्बोधित होते हुए फरमाया: "यह बहुत अच्छा है कि नए विद्वान आए हैं।" लोगों को आप से नई जानकारी मिलेंगी। अब यह प्रदर्शनी पहले से बढ़ चुकी है और इसमें वृद्धि हुई है।

* एक महिला मेहमान ने कहा कि आपके समुदाय की महिलाओं बहुत पढ़ी लिखी हैं। महिलाओं ने हम से बहुत मुश्किल और शैक्षणिक सवाल पूछे थे।

* एक मेहमान ने कहा कि जलसा सालाना में शामिल होना मेरे लिए एक असाधारण अनुभव था। अब यह मेरे लिए मुश्किल है कि मैं अगली बार नहीं आऊं। अब मुझे अगली बार आना होगा।

प्रोफेसर "डॉ ओशासा अद्दाल्लाई" जो कि लंदन विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं वह बार-बार इस बात का अफसोस करते थे कि वह यहां 25 साल से रह रहे थे लेकिन एक बार फिर भी उन्होंने इस जलसा के बारे में कुछ भी नहीं किया। महोदय इस हात पर हैरान थे कि स्वयंसेवकों की इतनी बड़ी बड़ी महारत और ख़ुशी से यह काम कर रही है।

उन्होंने यह भी आशा व्यक्त की कि काश वह पहले इस समारोह में शामिल होते। कहने लगे अगले साल वह अपने सहयोगियों और छात्रों को भी जलसा सालाना में शामिल होने के लिए कहेंगे।

महोदय ख़ुद तो ग़ैर अहमदी हैं लेकिन कहने लगे कि "यही इस्लाम का असली चेहरा है और दूसरे मुसलमानों को इससे नमूना लेना चाहिए।"

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad